قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

فَمَنْ اَظْلَمُ

पारा - 24

eParah

فَمَنْ	اَظْلَمُ	مِمَّنْ	كَذَبَ	عَلَى اللّٰهِ	وَ كَذَّبَ	بِالصِّدْقِ
फिर कौन	बड़ा ज़ालिम है	उससे जो	झूठ बोले	अल्लाह पर	और झुठलाए	सच्चाई को

اِذْ	جَآءَهٗ ؕ	اَلَيْسَ	فِيْ جَهَنَّمَ	مَثْوًى	لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿32﴾	وَالَّذِيْ
जब	वो आ जाए उसके पास	क्या नहीं है	जहन्नम में	ठिकाना	काफ़िरों के लिए	और वो जो

جَآءَ	بِالصِّدْقِ	وَصَدَّقَ	بِهٖٓ	اُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْمُتَّقُوْنَ ﴿33﴾	لَهُمْ
लाया	सच्चाई को	और उसने तस्दीक़ की	उसकी	यही लोग हैं	वो	जो मुत्तक़ी हैं	उनके लिए है

مَّا	يَشَآءُوْنَ	عِنْدَ	رَبِّهِمْ ؕ	ذٰلِكَ	جَزٰٓؤُا	الْمُحْسِنِيْنَ ﴿34﴾ ۚ
जो	वो चाहेंगे	पास	उनके रब के	ये	बदला है	नेको कारों का

لِيُكَفِّرَ	اللّٰهُ	عَنْهُمْ	اَسْوَاَ	الَّذِيْ	عَمِلُوْا	وَيَجْزِيَهُمْ	اَجْرَهُمْ
ताकि दूर कर दे	अल्लाह	उनसे	बदतरीन	वो जो	उन्होंने अमल किए	और बदला में दे उन्हें	अज्र उनके

بِاَحْسَنِ	الَّذِيْ	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿35﴾	اَلَيْسَ	اللّٰهُ	بِكَافٍ
बेहतरीन	वो जो	थे वो	वो अमल करते	क्या नहीं है	अल्लाह	काफ़ी

عَبْدَهٗ ؕ	وَيُخَوِّفُوْنَكَ	بِالَّذِيْنَ	مِنْ دُوْنِهٖ ؕ	وَمَنْ	يُّضْلِلِ	اللّٰهُ
अपने बंदे को	और वो डराते हैं आपको	उनसे जो	उसके सिवा हैं	और जिसे	भटका दे	अल्लाह

فَمَا	لَهٗ	مِنْ هَادٍ ﴿36﴾ ۚ	وَمَنْ	يَّهْدِ	اللّٰهُ	لَهٗ
तो नहीं	उसके लिए	कोई हिदायत देने वाला	और जिसे	हिदायत दे	अल्लाह	उसके लिए

مِنْ مُّضِلٍّ ؕ	اَلَيْسَ	اللّٰهُ	بِعَزِيْزٍ	ذِي انْتِقَامٍ ﴿37﴾	وَلَئِنْ	سَاَلْتَهُمْ
कोई भटकाने वाला	क्या नहीं है	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त	इन्तिक़ाम लेने वाला	और अलबत्ता अगर	पूछें आप उनसे

مَّنْ	خَلَقَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ	لَيَقُوْلُنَّ	اللّٰهُ ؕ	قُلْ	اَفَرَءَيْتُمْ
किसने	पैदा किया	आसमानों	और ज़मीन को	अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे	अल्लाह ने	कह दीजिए	क्या फिर देखा तुमने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مَّا	تَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	اِنْ	اَرَادَنِيَ	اللّٰهُ	بِضُرٍّ
जिन्हें	तुम पुकारते हो	सिवाए	अल्लाह के	अगर	इरादा करे मेरे साथ	अल्लाह	किसी तकलीफ़ का
هَلْ	هُنَّ	كٰشِفٰتُ	ضُرِّهٖٓ	اَوْ	اَرَادَنِيْ	بِرَحْمَةٍ	هَلْ
क्या	वो सब	दूर करने वाली हैं	उसकी तकलीफ़ को	या	वो इरादा करे मेरे साथ	किसी रहमत का	क्या
هُنَّ	مُمْسِكٰتُ	رَحْمَتِهٖ ؕ	قُلْ	حَسْبِيَ	اللّٰهُ ؕ	عَلَيْهِ	يَتَوَكَّلُ
वो सब	रोकने वाली हैं	उसकी रहमत को	कह दीजिए	काफ़ी है मुझे	अल्लाह	उसी पर	तवक्कल करते है
الْمُتَوَكِّلُوْنَ ﴿38﴾	قُلْ	يٰقَوْمِ	اعْمَلُوْا	عَلٰى مَكَانَتِكُمْ	اِنِّيْ	عَامِلٌ ۚ	
तवक्कल करने वाले	कह दीजिए	ऐ मेरी क़ौम	अमल करो	अपनी जगह पर	बेशक मैं	अमल करने वाला हूं	
فَسَوْفَ	تَعْلَمُوْنَ ﴿39﴾ ۙ	مَنْ	يَّاْتِيْهِ	عَذَابٌ	يُّخْزِيْهِ	وَيَحِلُّ	
पस अनक़रीब	तुम जान लोगे	कौन है	आता है उसके पास	ऐसा अज़ाब	जो रुस्वा कर दे उसे	और उतरता है	
عَلَيْهِ	عَذَابٌ	مُّقِيْمٌ ﴿40﴾	اِنَّآ	اَنْزَلْنَا	عَلَيْكَ	الْكِتٰبَ	
उस पर	अज़ाब	क़ायम रहने वाला/दाइमी	बेशक हम	नाज़िल की हमने	आप पर	किताब	
لِلنَّاسِ	بِالْحَقِّ ۚ	فَمَنِ	اهْتَدٰى	فَلِنَفْسِهٖ ۚ	وَمَنْ	ضَلَّ	
लोगों के लिए	साथ हक़ के	तो जो	हिदायत पा जाए	तो उसके अपने ही लिए है	और जो कोई	भटके	
فَاِنَّمَا	يَضِلُّ	عَلَيْهَا ۚ	وَمَآ	اَنْتَ	عَلَيْهِمْ	بِوَكِيْلٍ ﴿41﴾ ع	اَللّٰهُ
तो बेशक	वो भटकता है	अपने ख़िलाफ़	और नहीं	आप	उन पर	कोई ज़िम्मेदार	अल्लाह
يَتَوَفَّى	الْاَنْفُسَ	حِيْنَ	مَوْتِهَا	وَالَّتِيْ	لَمْ	تَمُتْ	فِيْ مَنَامِهَا ۚ
वो फ़ौत करता है	जानों को	वक़्त पर	उनकी मौत के	और वो जो	नहीं	वो मरें	अपनी नींद में
فَيُمْسِكُ	الَّتِيْ	قَضٰى	عَلَيْهَا	الْمَوْتَ	وَيُرْسِلُ	الْاُخْرٰٓى	
पस वो रोक लेता है	उसको	उसने फ़ैसला किया	जिस पर	मौत का	और वो भेज देता है	दूसरी (रूहों) को	

ع 4 10 1

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلٰٓى اَجَلٍ	مُّسَمًّى ؕ	اِنَّ	فِىْ ذٰلِكَ	لَاٰيٰتٍ	لِّقَوْمٍ	يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿42﴾
एक वक़्त तक	जो मुक़र्रर है	बेशक	उसमें	अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो ग़ौरो फ़िक्र करते हैं

اَمِ	اتَّخَذُوْا	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	شُفَعَآءَ ؕ	قُلْ	اَوَ لَوْ	كَانُوْا
क्या	उन्होंने बना रखे हैं	सिवाए	अल्लाह के	कुछ सिफ़ारिशी	कह दीजिए	क्या भला अगर	हों वो

لَا يَمْلِكُوْنَ	شَيْـًٔا	وَّلَا	يَعْقِلُوْنَ ﴿43﴾	قُلْ	لِّلّٰهِ	الشَّفَاعَةُ
ना वो मिलकियत रखते	किसी चीज़ की	और ना	वो अक़्ल रखते	कह दीजिए	अल्लाह ही के लिए है	शफ़ाअत/सिफ़ारिश

جَمِيْعًا ؕ	لَهٗ	مُلْكُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	ثُمَّ	اِلَيْهِ
सारी की सारी	उसी के लिए है	बादशाहत	आसमानों	और ज़मीन की	फिर	तरफ़ उसी के

تُرْجَعُوْنَ ﴿44﴾	وَاِذَا	ذُكِرَ	اللّٰهُ	وَحْدَهُ	اشْمَاَزَّتْ	قُلُوْبُ
तुम लौटाए जाओगे	और जब	ज़िक्र किया जाता है	अल्लाह का	अकेले उसी का	नफ़रत करते हैं	दिल

الَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	بِالْاٰخِرَةِ ۚ	وَاِذَا	ذُكِرَ	الَّذِيْنَ	مِنْ دُوْنِهٖٓ
उन लोगों के जो	नहीं वो ईमान लाते	आख़िरत पर	और जब	ज़िक्र किया जाता है	उनका जो	उसके अलावा हैं

اِذَا	هُمْ	يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿45﴾	قُلِ	اللّٰهُمَّ	فَاطِرَ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ
यकायक	वो	वो ख़ुश हो जाते है	कह दीजिए	ऐ अल्लाह	ऐ पैदा करने वाले	आसमानों	और ज़मीन के

عٰلِمَ	الْغَيْبِ	وَالشَّهَادَةِ	اَنْتَ	تَحْكُمُ	بَيْنَ	عِبَادِكَ
ऐ जानने वाले	ग़ैब	और हाज़िर के	तू ही	तू फ़ैसला करेगा	दर्मियान	अपने बंदों के

فِىْ مَا	كَانُوْا	فِيْهِ	يَخْتَلِفُوْنَ ﴿46﴾	وَلَوْ	اَنَّ	لِلَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا
उसमें जो	हैं वो	उसमें	वो इख़्तिलाफ़ करते	और अगर	बेशक हो	उनके लिए जिन्होंने	ज़ुल्म किया

مَا	فِى الْاَرْضِ	جَمِيْعًا	وَّمِثْلَهٗ	مَعَهٗ	لَافْتَدَوْا	بِهٖ
जो कुछ	ज़मीन में है	सब का सब	और उसकी मानिंद	साथ उसके	अलबत्ता वो फ़िदया में दे दें	उसे

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ ؕ	وَ بَدَا	لَهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	مَا
बुरे अज़ाब से (बचने के लिए)	दिन	क़यामत के	और ज़ाहिर हो जाएगा	उनके लिए	अल्लाह की तरफ़ से	जो

لَمْ	يَكُوْنُوْا	يَحْتَسِبُوْنَ ﴿47﴾	وَ بَدَا	لَهُمْ	سَيِّاٰتُ	مَا
ना	थे वो	वो गुमान रखते	और ज़ाहिर हो जाऐंगी	उनके लिए	बुराईयां	उन (आमाल) की जो

كَسَبُوْا	وَ حَاقَ	بِهِمْ	مَّا	كَانُوْا	بِهٖ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿48﴾	فَاِذَا	مَسَّ
उन्होंने कमाए	और घेर लेगा	उन्हें	वो जो	थे वो	उसका	वो मज़ाक़ उड़ाते	फिर जब	पहुंचता है

الْاِنْسَانَ	ضُرٌّ	دَعَانَا ۫	ثُمَّ	اِذَا	خَوَّلْنٰهُ	نِعْمَةً	مِّنَّا ۙ
इंसान को	कोई नुक़्सान	वो पुकारता है हमें	फिर	जब	हम अता करते हैं उसे	कोई नेअमत	अपने पास से

قَالَ	اِنَّمَآ	اُوْتِيْتُهٗ	عَلٰى عِلْمٍ ؕ	بَلْ	هِيَ	فِتْنَةٌ	وَّلٰكِنَّ
वो कहता है	बेशक	मैं दिया गया हूं उसे	इल्म की बिना पर	बल्कि	वो	एक फ़ितना है	और लेकिन

اَكْثَرَهُمْ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿49﴾	قَدْ	قَالَهَا	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ	فَمَآ
अक्सर उनके	नहीं वो इल्म रखते	तहक़ीक़	कहा था उसे	उन लोगों ने जो	उनसे पहले थे	तो ना

اَغْنٰى	عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَكْسِبُوْنَ ﴿50﴾	فَاَصَابَهُمْ	سَيِّاٰتُ	مَا
काम आया	उनके	जो	थे वो	वो कमाई करते	तो पहुंची उन्हें	बुराईयां	उन (आमाल) की जो

كَسَبُوْا ؕ	وَالَّذِيْنَ	ظَلَمُوْا	مِنْ هٰٓؤُلَآءِ	سَيُصِيْبُهُمْ	سَيِّاٰتُ
उन्होंने कमाए	और वो जिन्होंने	ज़ुल्म किया	उन लोगों में से	अनक़रीब पहुंचेंगी उन्हें	बुराईयां

مَا	كَسَبُوْا ۙ	وَمَا	هُمْ	بِمُعْجِزِيْنَ ﴿51﴾	اَوَ لَمْ	يَعْلَمُوْٓا	اَنَّ
उन (आमाल) की जो	उन्होंने कमाए	और नहीं हैं	वो	आजिज़ करने वाले	क्या भला नहीं	उन्होंने जाना	बेशक

اللّٰهَ	يَبْسُطُ	الرِّزْقَ	لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَ يَقْدِرُ ؕ	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ
अल्लाह	वो कुशादा कर देता है	रिज़्क़	जिसके लिए	वो चाहता है	और वो तंग कर देता है	बेशक	इसमें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 5 11 2

لَاٰيٰتٍ	لِّقَوْمٍ	يُّؤْمِنُوْنَ ﴿52﴾ ع	قُلْ	يٰعِبَادِيَ	الَّذِيْنَ	اَسْرَفُوْا
अलबत्ता निशानियां हैं	उन लोगों के लिए	जो ईमान लाते हैं	कह दीजिए	ऐ मेरे बंदों	वो जिन्होंने	ज़्यादती की

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ	لَا تَقْنَطُوْا	مِنْ رَّحْمَةِ	اللّٰهِ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	يَغْفِرُ
अपने नफ़्सों पर	ना तुम मायूस हो	रहमत से	अल्लाह की	बेशक	अल्लाह	वो बख़्श देता है

الذُّنُوْبَ	جَمِيْعًا ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	الْغَفُوْرُ	الرَّحِيْمُ ﴿53﴾	وَ اَنِيْبُوْٓا
गुनाहों को	सब के सब को	बेशक वो	वो ही है	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	और रुजूअ करो

اِلٰى رَبِّكُمْ	وَ اَسْلِمُوْا	لَهٗ	مِنْ قَبْلِ	اَنْ	يَّاْتِيَكُمُ	الْعَذَابُ
तरफ़ अपने रब के	और फ़रमांबरदार बन जाओ	उसके लिए	इससे पहले	कि	आ जाए तुम्हारे पास	अज़ाब

ثُمَّ	لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿54﴾	وَ اتَّبِعُوْٓا	اَحْسَنَ	مَآ	اُنْزِلَ	اِلَيْكُمْ
फिर	ना तुम मदद किए जाओ	और पैरवी करो	बेहतरीन की	जो	नाज़िल किया गया	तरफ़ तुम्हारे

مِّنْ رَّبِّكُمْ	مِّنْ قَبْلِ	اَنْ	يَّاْتِيَكُمُ	الْعَذَابُ	بَغْتَةً	وَّ اَنْتُمْ
तुम्हारे रब की तरफ़ से	इससे पहले	कि	आ जाए तुम्हारे पास	अज़ाब	अचानक	और तुम

لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿55﴾ لا	اَنْ	تَقُوْلَ	نَفْسٌ	يّٰحَسْرَتٰى	عَلٰى مَا	فَرَّطْتُّ
ना तुम शऊर रखते हो	(ऐसा ना हो) कि	कहे	कोई नफ़्स	ऐ हसरत	उस पर जो	कमी/कोताही की मैंने

فِيْ جَنْۢبِ	اللّٰهِ	وَ اِنْ	كُنْتُ	لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿56﴾ لا	اَوْ	تَقُوْلَ
हक़ में	अल्लाह के	और बेशक	मैं था	अलबत्ता मज़ाक़ उड़ाने वालों में से	या	वो कहे

لَوْ	اَنَّ	اللّٰهَ	هَدٰىنِيْ	لَكُنْتُ	مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿57﴾ لا	اَوْ	تَقُوْلَ
काश	ये कि	अल्लाह	हिदायत देता मुझे	अलबत्ता होता मैं	मुत्तक़ी लोगों में से	या	वो कहे

حِيْنَ	تَرَى	الْعَذَابَ	لَوْ	اَنَّ	لِيْ	كَرَّةً	فَاَكُوْنَ
जिस वक़्त	वो देखे	अज़ाब	काश	ये कि (हो)	मेरे लिए	एक बार पलटना	तो मैं हो जाऊं

HIDAYA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿58﴾	بَلٰى	قَدْ	جَآءَتْكَ	اٰيٰتِيْ	فَكَذَّبْتَ	بِهَا
नेको कारों में से	क्यों नहीं	तहक़ीक़	आईं तेरे पास	आयात मेरी	तो झुठला दिया तूने	उन्हें

وَاسْتَكْبَرْتَ	وَكُنْتَ	مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿59﴾	وَيَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	تَرَى
और तकब्बुर किया तूने	और था तू	काफ़िरों में से	और दिन	क़यामत के	आप देखेंगे

الَّذِيْنَ	كَذَبُوْا	عَلَى اللّٰهِ	وُجُوْهُهُمْ	مُّسْوَدَّةٌ ؕ	اَلَيْسَ	فِيْ جَهَنَّمَ
उनको जिन्होंने	झूठ बोला	अल्लाह पर	चेहरे उनके	स्याह होंगे	क्या नहीं है	जहन्नम में

مَثْوًى	لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿60﴾	وَيُنَجِّي	اللّٰهُ	الَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	بِمَفَازَتِهِمْ ۚ
कोई ठिकाना	तकब्बुर करने वालों के लिए	और निजात देगा	अल्लाह	उनको जिन्होंने	तक़वा किया	बवजह उनकी कामयाबी के

لَا يَمَسُّهُمُ	السُّوْٓءُ	وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُوْنَ ﴿61﴾	اَللّٰهُ	خَالِقُ	كُلِّ
नहीं पहुंचेगी उन्हें	कोई बुराई	और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	अल्लाह	ख़ालिक़ है	हर

شَيْءٍ ۚ	وَّهُوَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	وَّكِيْلٌ ﴿62﴾	لَهٗ	مَقَالِيْدُ
चीज़ का	और वो	ऊपर	हर	चीज़ के	निगरान है	उसी के लिए हैं	कुंजियां

السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ ؕ	وَالَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِاٰيٰتِ	اللّٰهِ	اُولٰٓئِكَ
आसमानों	और ज़मीन की	और वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	साथ आयात के	अल्लाह की	यही लोग हैं

هُمُ	الْخٰسِرُوْنَ ﴿63﴾ ع	قُلْ	اَفَغَيْرَ	اللّٰهِ	تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ	اَعْبُدُ
वो	जो नुक़्सान उठाने वाले हैं	कह दीजिए	क्या फिर ग़ैर	अल्लाह के (बारे में)	तुम हुक्म देते हो मुझे	कि मैं इबादत करूं

ع 6 11 3

اَيُّهَا	الْجٰهِلُوْنَ ﴿64﴾	وَلَقَدْ	اُوْحِيَ	اِلَيْكَ	وَاِلَى الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِكَ ۚ
ऐ	जाहिलो	और अलबत्ता तहक़ीक़	वही किया गया	तरफ़ आपके	और तरफ़ उन लोगों के जो	आपसे पहले थे

لَئِنْ	اَشْرَكْتَ	لَيَحْبَطَنَّ	عَمَلُكَ	وَلَتَكُوْنَنَّ	مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿65﴾
अलबत्ता अगर	शिर्क किया आपने	यक़ीनन ज़रूर ज़ाया हो जाएगा	अमल आप का	और यक़ीनन ज़रूर आप हो जाऐंगे	नुक़्सान उठाने वालों में से

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بَلِ	اللّٰهَ	فَاعْبُدْ	وَ كُنْ	مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿66﴾	وَمَا	قَدَرُوا
बल्कि	अल्लाह ही की	पस आप इबादत कीजिए	और हो जाइए	शुक्रगुज़ारों में से	और नहीं	उन्होंने क़द्र की

اللّٰهَ	حَقَّ	قَدْرِهٖ ۖ	وَالْاَرْضُ	جَمِيْعًا	قَبْضَتُهٗ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ
अल्लाह की	जैसे हक़ था	उसकी क़द्र का	और ज़मीन	सारी की सारी	उसकी मुट्ठी में होगी	दिन	क़यामत के

وَالسَّمٰوٰتُ	مَطْوِيّٰتٌۢ	بِيَمِيْنِهٖ ؕ	سُبْحٰنَهٗ	وَتَعٰلٰى	عَمَّا
और आसमान	लिपटे हुए होंगे	उसके दाएं हाथ में	पाक है वो	और वो बुलंदतर है	उससे जो

يُشْرِكُوْنَ ﴿67﴾	وَنُفِخَ	فِي الصُّوْرِ	فَصَعِقَ	مَنْ	فِي السَّمٰوٰتِ
वो शरीक ठहराते हैं	और फूंका जाएगा	सूर में	तो बेहोश हो जाएगा	जो कोई	आसमानों में

وَمَنْ	فِي الْاَرْضِ	اِلَّا	مَنْ	شَآءَ	اللّٰهُ ؕ	ثُمَّ	نُفِخَ	فِيْهِ
और जो कोई	ज़मीन में (होगा)	मगर	जिसे	चाहे	अल्लाह	फिर	फूंका जाएगा	उसमें

اُخْرٰى	فَاِذَا	هُمْ	قِيَامٌ	يَّنْظُرُوْنَ ﴿68﴾	وَاَشْرَقَتِ	الْاَرْضُ	بِنُوْرِ
दूसरी मर्तबा	तो यकायक	वो	खड़े	वो देख रहे होंगे	और चमक उठेगी	ज़मीन	नूर से

رَبِّهَا	وَوُضِعَ	الْكِتٰبُ	وَجِايْٓءَ	بِالنَّبِيّٖنَ	وَالشُّهَدَآءِ	وَقُضِيَ
अपने रब के	और रख दी जाएगी	किताब	और लाए जाऐंगे	अम्बिया	और गवाह	और फ़ैसला कर दिया जाएगा

بَيْنَهُمْ	بِالْحَقِّ	وَهُمْ	لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿69﴾	وَوُفِّيَتْ	كُلُّ	نَفْسٍ
दर्मियान उनके	साथ हक़ के	और वो	वो ज़ुल्म ना किए जाऐंगे	और पूरा-पूरा दिया जाएगा	हर	नफ़्स को

مَّا	عَمِلَتْ	وَهُوَ	اَعْلَمُ	بِمَا	يَفْعَلُوْنَ ﴿70﴾ ع	وَسِيْقَ	الَّذِيْنَ
जो	उसने अमल किया	और वो	ज़्यादा जानता है	जो कुछ	वो करते हैं	और हांके जाऐंगे	वो जिन्होंने

ع 7 7 4

كَفَرُوْٓا	اِلٰى جَهَنَّمَ	زُمَرًا ؕ	حَتّٰٓى	اِذَا	جَآءُوْهَا	فُتِحَتْ
कुफ़्र किया	तरफ़ जहन्नम के	गिरोह दर गिरोह	यहां तक कि	जब	वो आ जाऐंगे उसके पास	खोल दिए जाऐंगे

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَبْوَابُهَا	وَقَالَ	لَهُمْ	خَزَنَتُهَآ	اَلَمْ	يَاْتِكُمْ	رُسُلٌ	مِّنْكُمْ
दरवाज़े उसके	और कहेंगे	उन्हें	दरबान उसके	क्या नहीं	आए थे तुम्हारे पास	कुछ रसूल	तुम में से

يَتْلُوْنَ	عَلَيْكُمْ	اٰيٰتِ	رَبِّكُمْ	وَيُنْذِرُوْنَكُمْ	لِقَآءَ	يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ
जो पढ़ते	तुम पर	आयात	तुम्हारे रब की	और वो डराते तुम्हें	मुलाक़ात से	तुम्हारे इस दिन की

قَالُوْا	بَلٰى	وَلٰكِنْ	حَقَّتْ	كَلِمَةُ	الْعَذَابِ	عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿71﴾
वो कहेंगे	क्यों नहीं	और लेकिन	साबित हो गई	बात	अज़ाब की	काफ़िरों पर

قِيْلَ	ادْخُلُوْٓا	اَبْوَابَ	جَهَنَّمَ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ؕ	فَبِئْسَ	مَثْوَى
कहा जाएगा	दाख़िल हो जाओ	दरवाज़ों में	जहन्नम के	हमेशा रहने वाले	इसमें	तो कितना बुरा है	ठिकाना

الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿72﴾	وَسِيْقَ	الَّذِيْنَ	اتَّقَوْا	رَبَّهُمْ	اِلَى الْجَنَّةِ
तकब्बुर करने वालों का	और ले जाए जाऐंगे	वो लोग जो	डरे	अपने रब से	तरफ़ जन्नत के

زُمَرًا ؕ	حَتّٰٓى	اِذَا	جَآءُوْهَا	وَفُتِحَتْ	اَبْوَابُهَا	وَقَالَ
गिरोह दर गिरोह	यहां तक कि	जब	वो आ जाऐंगे उसके पास	और खोल दिए जाऐंगे	दरवाज़े उसके	और कहेंगे

لَهُمْ	خَزَنَتُهَا	سَلٰمٌ	عَلَيْكُمْ	طِبْتُمْ	فَادْخُلُوْهَا	خٰلِدِيْنَ ﴿73﴾
उन्हें	दरबान उसके	सलामती हो	तुम पर	तुम अच्छे रहे	पस दाख़िल हो जाओ इनमें	हमेशा रहने वाले

وَقَالُوا	الْحَمْدُ	لِلّٰهِ	الَّذِىْ	صَدَقَنَا	وَعْدَهٗ	وَاَوْرَثَنَا
और वो कहेंगे	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	जिसने	सच्चा किया हमसे	वादा अपना	और वारिस बना दिया हमें

الْاَرْضَ	نَتَبَوَّاُ	مِنَ الْجَنَّةِ	حَيْثُ	نَشَآءُ ۚ	فَنِعْمَ	اَجْرُ
ज़मीन का	हम जगह बना सकते हैं	जन्नत में	जहां	हम चाहें	तो कितना अच्छा है	अज्र

الْعٰمِلِيْنَ ﴿74﴾	وَتَرَى	الْمَلٰٓئِكَةَ	حَآفِّيْنَ	مِنْ حَوْلِ	الْعَرْشِ
अमल करने वालों का	और आप देखेंगे	फ़रिश्तों को	घेरा डाले हुए	इर्द-गिर्द से	अर्श के

ع 8 5 5

بِالْحَقِّ	بَيْنَهُمْ	وَقُضِيَ	رَبِّهِمْ ج	بِحَمْدِ	يُسَبِّحُوْنَ
साथ हक़ के	दर्मियान उनके	और फ़ैसला कर दिया जाएगा	अपने रब की	साथ तारीफ़ के	वो तस्बीह कर रहे होंगे

الْعٰلَمِيْنَ (75) ع	رَبِّ	لِلّٰهِ	الْحَمْدُ	وَقِيْلَ
तमाम जहानों का	जो रब है	अल्लाह के लिए है	सब तारीफ़	और कह दिया जाएगा

رُكُوْعَاتُهَا: 9 — 60 سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ 40 — اٰيَاتُهَا: 85

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

غَافِرِ	الْعَلِيْمِ (2) لا	الْعَزِيْزِ	مِنَ اللّٰهِ	الْكِتٰبِ	تَنْزِيْلُ	حٰمٓ (1) ج
बख़्शने वाला है	ख़ूब इल्म वाला है	जो बहुत ज़बरदस्त है	अल्लाह की तरफ़ से	किताब का	नाज़िल करना है	حٰمٓ

لَآ	ذِي الطَّوْلِ ط	الْعِقَابِ لا	شَدِيْدِ	التَّوْبِ	وَقَابِلِ	الذَّنْبِ
नहीं	बड़े फ़ज़्ल वाला है	सज़ा वाला है	सख़्त	तौबा का	और क़ुबूल करने वाला है	गुनाह का

فِيْٓ اٰيٰتِ	يُجَادِلُ	مَا	الْمَصِيْرُ (3)	اِلَيْهِ	هُوَ ط	اِلَّا	اِلٰهَ
आयात में	झगड़ा करते	नहीं	लौटना है	तरफ़ उसी के	वो ही	मगर	कोई इलाह (बरहक़)

فِي الْبِلَادِ (4)	تَقَلُّبُهُمْ	يَغْرُرْكَ	فَلَا	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	اِلَّا	اللّٰهِ
शहरों में	चलना फिरना उनका	धोखे में डाले आपको	तो ना	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	मगर	अल्लाह की

وَهَمَّتْ	مِنْ بَعْدِهِمْ ص	وَالْاَحْزَابُ	نُوْحٍ	قَوْمُ	قَبْلَهُمْ	كَذَّبَتْ
और इरादा किया	बाद उनके	और गिरोहों ने	नूह ने	क़ौमे	उनसे पहले	झुठलाया

بِالْبَاطِلِ	وَجٰدَلُوْا	لِيَاْخُذُوْهُ	بِرَسُوْلِهِمْ	اُمَّةٍ	كُلُّ
साथ बातिल के	और उन्होंने झगड़ा किया	ताकि वो पकड़ें उसे	अपने रसूल का	उम्मत ने	हर

عِقَابِ (5)	كَانَ	فَكَيْفَ	فَاَخَذْتُهُمْ قف	الْحَقَّ	بِهِ	لِيُدْحِضُوْا
सज़ा मेरी	थी	तो कैसी	तो पकड़ लिया मैंने उन्हें	हक़ को	साथ उसके	ताकि वो ख़त्म (ज़ाइल) कर दें

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَ كَذٰلِكَ	حَقَّتْ	كَلِمَتُ	رَبِّكَ	عَلَى الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا	اَنَّهُمْ
और इसी तरह	साबित हो गई	बात	आपके रब की	ऊपर उनके जिन्होंने	कुफ़्र किया	कि यक़ीनन वो

اَصْحٰبُ	النَّارِ ۝6	اَلَّذِيْنَ	يَحْمِلُوْنَ	الْعَرْشَ	وَمَنْ	حَوْلَهٗ
साथी हैं	आग के	वो (फ़रिश्ते) जो	उठाए हुए हैं	अर्श को	और जो	उसके इर्द-गिर्द हैं

وقف لازم
صلی اللہ علیہ وسلم

يُسَبِّحُوْنَ	بِحَمْدِ	رَبِّهِمْ	وَيُؤْمِنُوْنَ	بِهٖ	وَيَسْتَغْفِرُوْنَ
वो तस्बीह कर रहे हैं	साथ तारीफ़ के	अपने रब की	और वो ईमान रखते हैं	उस पर	और वो बख़्शिश मांगते हैं

لِلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا ۚ	رَبَّنَا	وَسِعْتَ	كُلَّ	شَيْءٍ	رَّحْمَةً	وَّعِلْمًا
उनके लिए जो	ईमान लाए	ऐ हमारे रब	घेर रखा है तूने	हर	चीज़ को	रहमत	और इल्म से

فَاغْفِرْ	لِلَّذِيْنَ	تَابُوْا	وَاتَّبَعُوْا	سَبِيْلَكَ	وَقِهِمْ	عَذَابَ
पस बख़्श दे	उनको जिन्होंने	तौबा की	और उन्होंने पैरवी की	तेरे रास्ते की	और बचा उन्हें	अज़ाब से

الْجَحِيْمِ ۝7	رَبَّنَا	وَ اَدْخِلْهُمْ	جَنّٰتِ	عَدْنِ	الَّتِيْ	وَعَدْتَّهُمْ
जहन्नम के	ऐ हमारे रब	और दाख़िल कर उन्हें	बाग़ात में	हमेशगी के	वो जो	वादा किया था तूने उनसे

وَمَنْ	صَلَحَ	مِنْ اٰبَآئِهِمْ	وَ اَزْوَاجِهِمْ	وَذُرِّيّٰتِهِمْ ؕ	اِنَّكَ
और जो कोई	नेक हुए	उनके आबा ओ अजदाद में से	और उनकी बीवियों	और उनकी औलादों में से	बेशक तू

اَنْتَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ ۝8 ۙ	وَقِهِمُ	السَّيِّاٰتِ ؕ	وَمَنْ	تَقِ
तू ही है	बहुत ज़बरदस्त	ख़ूब हिक्मत वाला	और बचा उन्हें	बुराईयों से	और जिसे	तू बचा लेगा

ع 1 9 6

السَّيِّاٰتِ	يَوْمَئِذٍ	فَقَدْ	رَحِمْتَهٗ ؕ	وَذٰلِكَ	هُوَ	الْفَوْزُ	الْعَظِيْمُ ۝9 ع
बुराईयों से	उस दिन	पस तहक़ीक़	रहम किया तूने उस पर	और यही है	वो	कामयाबी	बहुत बड़ी

اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	يُنَادَوْنَ	لَمَقْتُ	اللّٰهِ	اَكْبَرُ	مِنْ مَّقْتِكُمْ
बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	वो पुकारे जाऐंगे	यक़ीनन नाराज़गी	अल्लाह की	ज़्यादा बड़ी है	तुम्हारी नाराज़गी से

اَنْفُسَكُمْ	اِذْ	تُدْعَوْنَ	اِلَى الْاِيْمَانِ	فَتَكْفُرُوْنَ ⑩	قَالُوْا
अपने आप पर	जब	तुम बुलाए जाते थे	तरफ़ ईमान के	तो तुम इंकार करते थे	वो कहेंगे

رَبَّنَآ	اَمَتَّنَا	اثْنَتَيْنِ	وَ اَحْيَيْتَنَا	اثْنَتَيْنِ	فَاعْتَرَفْنَا
ऐ हमारे रब	मौत दी तू ने हमें	दो बार	और ज़िन्दगी बख़्शी तू ने हमें	दो बार	तो ऐतराफ़ कर लिया हमने

بِذُنُوْبِنَا	فَهَلْ	اِلٰى خُرُوْجٍ	مِّنْ سَبِيْلٍ ⑪	ذٰلِكُمْ	بِاَنَّهٗٓ	اِذَا
अपने गुनाहों का	तो क्या है	तरफ़ निकलने के	कोई रस्ता	ये तुम्हारा (अंजाम)	इसलिए कि	जब

دُعِيَ	اللّٰهُ	وَحْدَهٗ	كَفَرْتُمْ ۚ	وَاِنْ	يُّشْرَكْ	بِهٖ	تُؤْمِنُوْا ؕ
पुकारा जाता	अल्लाह	अकेले उसी को	इन्कार करते थे तुम	और अगर	शरीक ठहराया जाता	साथ उसके	तो तुम मान जाते

فَالْحُكْمُ	لِلّٰهِ	الْعَلِيِّ	الْكَبِيْرِ ⑫	هُوَ	الَّذِيْ	يُرِيْكُمْ	اٰيٰتِهٖ
पस फ़ैसला	अल्लाह ही के लिए है	जो बहुत बुलंद है	बहुत बड़ा है	वो ही है	जो	दिखाता है तुम्हें	निशानियां अपनी

وَيُنَزِّلُ	لَكُمْ	مِّنَ السَّمَآءِ	رِزْقًا ؕ	وَمَا	يَتَذَكَّرُ	اِلَّا	مَنْ
और उतारता है	तुम्हारे लिए	आसमान से	रिज़्क़	और नहीं	नसीहत पकड़ता	मगर	वो जो

يُّنِيْبُ ⑬	فَادْعُوا	اللّٰهَ	مُخْلِصِيْنَ	لَهُ	الدِّيْنَ	وَلَوْ	كَرِهَ
वो रुजूअ करता है	पस पुकारो	अल्लाह को	ख़ालिस करने वाले होकर	उसी के लिए	दीन को	और अगरचे	नापसंद करें

الْكٰفِرُوْنَ ⑭	رَفِيْعُ	الدَّرَجٰتِ	ذُو الْعَرْشِ ۚ	يُلْقِي	الرُّوْحَ	مِنْ اَمْرِهٖ
काफ़िर	बुलंद	दर्जों वाला है	अर्श वाला है	वो डालता है	वही को	अपने हुक्म से

عَلٰى مَنْ	يَّشَآءُ	مِنْ عِبَادِهٖ	لِيُنْذِرَ	يَوْمَ	التَّلَاقِ ⑮	يَوْمَ
जिस पर	वो चाहता है	अपने बंदों में से	ताकि वो डराए	दिन से	मुलाक़ात के	जिस दिन

هُمْ	بٰرِزُوْنَ ۚ	لَا يَخْفٰى	عَلَى اللّٰهِ	مِنْهُمْ	شَيْءٌ ؕ	لِمَنِ
वो	ज़ाहिर होंगे	ना छुपी होगी	अल्लाह पर	उनकी	कोई चीज़	किसके लिए है

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمُلْكُ	الْيَوْمَ ؕ	لِلّٰهِ	الْوَاحِدِ	الْقَهَّارِ ⑯	اَلْيَوْمَ	تُجْزٰى
बादशाहत	आज के दिन	अल्लाह ही के लिए है	जो एक है	सब पर ग़ालिब है	आज के दिन	बदला दिया जाएगा

كُلُّ	نَفْسٍ	بِمَا	كَسَبَتْ ؕ	لَا ظُلْمَ	الْيَوْمَ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ
हर	नफ़्स को	उसका जो	उसने कमाई की	नहीं कोई ज़ुल्म होगा	आज के दिन	बेशक	अल्लाह

سَرِيْعُ	الْحِسَابِ ⑰	وَ اَنْذِرْهُمْ	يَوْمَ	الْاٰزِفَةِ	اِذِ	الْقُلُوْبُ
जल्द लेने वाला है	हिसाब	और आप डराइए उन्हें	उस दिन से	जो क़रीब आ लगा है	जब	दिल

لَدَى	الْحَنَاجِرِ	كٰظِمِيْنَ ۘ	مَا	لِلظّٰلِمِيْنَ	مِنْ حَمِيْمٍ	وَّلَا
क़रीब (होंगे)	हलक़ के	ग़म से भरे हुए	नहीं	ज़ालिमों के लिए	कोई गहरा दोस्त	और ना

شَفِيْعٍ	يُّطَاعُ ⑱ ؕ	يَعْلَمُ	خَآئِنَةَ	الْاَعْيُنِ	وَمَا	تُخْفِى
कोई सिफ़ारिशी	जिसकी बात मानी जाए	वो जानता है	ख़यानत	आंखों की	और जो कुछ	छुपाते हैं

الصُّدُوْرُ ⑲	وَاللّٰهُ	يَقْضِىْ	بِالْحَقِّ ؕ	وَالَّذِيْنَ	يَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِهٖ
सीने	और अल्लाह	वो फ़ैसला करता है	साथ हक़ के	और जिन्हें	वो पुकारते हैं	उसके सिवा

لَا يَقْضُوْنَ	بِشَىْءٍ ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ	هُوَ	السَّمِيْعُ	الْبَصِيْرُ ⑳ ع
नहीं वो फ़ैसला करते	किसी चीज़ का	बेशक	अल्लाह	वो ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब देखने वाला

ع 2 11 7

اَوَلَمْ	يَسِيْرُوْا	فِى الْاَرْضِ	فَيَنْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ
क्या भला नहीं	वो चले फिरे	ज़मीन में	तो वो देखते	किस तरह	हुआ	अंजाम

الَّذِيْنَ	كَانُوْا	مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	كَانُوْا	هُمْ	اَشَدَّ	مِنْهُمْ	قُوَّةً
उनका जो	थे	उनसे पहले	थे वो	वो	ज़्यादा शदीद	उनसे	क़ुव्वत में

وَّاٰثَارًا	فِى الْاَرْضِ	فَاَخَذَهُمُ	اللّٰهُ	بِذُنُوْبِهِمْ ؕ	وَمَا	كَانَ
और आसार में	ज़मीन में	पस पकड़ लिया उन्हें	अल्लाह ने	बवजह उनके गुनाहों के	और ना	था

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَهُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	مِنْ وَّاقٍ ﴿21﴾	ذٰلِكَ	بِاَنَّهُمْ	كَانَتْ	تَّاْتِيْهِمْ
उनके लिए	अल्लाह से	कोई बचाने वाला	ये	बवजह उसके कि वो	थे	आते उनके पास

رُسُلُهُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ	فَكَفَرُوْا	فَاَخَذَهُمُ	اللّٰهُ ؕ	اِنَّهٗ	قَوِيٌّ
रसूल उनके	साथ वाज़ेह दलाइल के	तो उन्होंने इंकार किया	फिर पकड़ लिया उन्हें	अल्लाह ने	बेशक वो	बहुत क़ुव्वत वाला है

شَدِيْدُ	الْعِقَابِ ﴿22﴾	وَلَقَدْ	اَرْسَلْنَا	مُوْسٰى	بِاٰيٰتِنَا	وَسُلْطٰنٍ
सख़्त	सज़ा वाला है	और अलबत्ता तहक़ीक़	भेजा हमने	मूसा को	साथ अपनी निशानियों के	और दलील

مُّبِيْنٍ ﴿23﴾	اِلٰى فِرْعَوْنَ	وَهَامٰنَ	وَقَارُوْنَ	فَقَالُوْا	سٰحِرٌ
वाज़ेह के	तरफ़ फ़िरऔन	और हामान	और क़ारून के	तो उन्होंने कहा	जादूगर है

كَذَّابٌ ﴿24﴾	فَلَمَّا	جَآءَهُمْ	بِالْحَقِّ	مِنْ عِنْدِنَا	قَالُوا	اقْتُلُوْٓا
बहुत झूठा	तो जब	वो लाया उनके पास	हक़	हमारे पास से	उन्होंने कहा	क़त्ल करो

اَبْنَآءَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	مَعَهٗ	وَاسْتَحْيُوْا	نِسَآءَهُمْ ؕ	وَمَا
बेटों को	उनके जो	ईमान लाए	साथ उसके	और ज़िंदा रहने दो	उनकी औरतों को	और नहीं

كَيْدُ	الْكٰفِرِيْنَ	اِلَّا	فِيْ ضَلٰلٍ ﴿25﴾	وَقَالَ	فِرْعَوْنُ	ذَرُوْنِيْٓ	اَقْتُلْ
चाल	काफ़िरों की	मगर	गुमराही में	और कहा	फ़िरऔन ने	छोड़ दो मुझे	मैं क़त्ल करूं

مُوْسٰى	وَلْيَدْعُ	رَبَّهٗ ۚ	اِنِّيْٓ	اَخَافُ	اَنْ	يُّبَدِّلَ	دِيْنَكُمْ
मूसा को	और चाहिए कि वो पुकारे	अपने रब को	बेशक मैं	मैं डरता हूं	कि	वो बदल देगा	तुम्हारे दीन को

اَوْ	اَنْ	يُّظْهِرَ	فِي الْاَرْضِ	الْفَسَادَ ﴿26﴾	وَقَالَ	مُوْسٰٓى	اِنِّيْ
या	ये कि	वो फैला देगा	ज़मीन में	फ़साद	और कहा	मूसा ने	बेशक मैं

عُذْتُ	بِرَبِّيْ	وَرَبِّكُمْ	مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ	لَّا يُؤْمِنُ	بِيَوْمِ
पनाह ली मैंने	अपने रब की	और तुम्हारे रब की	हर तकब्बुर करने वाले से	जो नहीं ईमान रखता	दिन पर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 3/7/8

الْحِسَابِ ﴿27﴾ ع	وَقَالَ	رَجُلٌ	مُّؤْمِنٌ ۺ	مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ	يَكْتُمُ	اِيْمَانَهٗٓ
हिसाब के	और कहा	एक मर्द	मोमिन ने	आले फ़िरऔन में से	वो छुपाता था	ईमान अपना

اَتَقْتُلُوْنَ	رَجُلًا	اَنْ	يَّقُوْلَ	رَبِّيَ	اللّٰهُ	وَقَدْ	جَآءَكُمْ
क्या तुम क़त्ल कर दोगे	एक आदमी को	कि	वो कहता है	मेरा रब	अल्लाह है	हालांकि तहक़ीक़	वो लाया है तुम्हारे पास

بِالْبَيِّنٰتِ	مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ	وَاِنْ	يَّكُ	كَاذِبًا	فَعَلَيْهِ	كَذِبُهٗ ۚ
वाज़ेह दलाइल	तुम्हारे रब की तरफ़ से	और अगर	है वो	झूठा	तो उसी पर है	झूठ उसका

وَاِنْ	يَّكُ	صَادِقًا	يُّصِبْكُمْ	بَعْضُ	الَّذِيْ	يَعِدُكُمْ ؕ	اِنَّ
और अगर	है वो	सच्चा	पहुंचेगा तुम्हें	बाज़	वो जिसका	वो वादा करता है तुमसे	बेशक

اللّٰهَ	لَا يَهْدِيْ	مَنْ	هُوَ	مُسْرِفٌ	كَذَّابٌ ﴿28﴾	يٰقَوْمِ	لَكُمُ
अल्लाह	नहीं वो हिदायत देता	उसे जो हो	वो	हद से गुज़रने वाला	सख़्त झूठा	ऐ मेरी क़ौम	तुम्हारे लिए है

الْمُلْكُ	الْيَوْمَ	ظٰهِرِيْنَ	فِي الْاَرْضِ ز	فَمَنْ	يَّنْصُرُنَا	مِنْ بَاْسِ
बादशाहत	आज	कि ग़ालिब हो	ज़मीन में	फिर कौन	मदद करेगा हमारी	अज़ाब से

اللّٰهِ	اِنْ	جَآءَنَا ؕ	قَالَ	فِرْعَوْنُ	مَآ	اُرِيْكُمْ	اِلَّا	مَآ
अल्लाह के	अगर	वो आ गया हमारे पास	कहा	फ़िरऔन ने	नहीं	मैं दिखाता तुम्हें	मगर	जो

اَرٰى	وَمَآ	اَهْدِيْكُمْ	اِلَّا	سَبِيْلَ	الرَّشَادِ ﴿29﴾	وَقَالَ	الَّذِيْٓ
मैं देखता हूं	और नहीं	मैं दिखाता तुम्हें	मगर	रास्ता	भलाई का	और कहा उसने	जो

اٰمَنَ	يٰقَوْمِ	اِنِّيْٓ	اَخَافُ	عَلَيْكُمْ	مِّثْلَ	يَوْمِ	الْاَحْزَابِ ﴿30﴾ لا
ईमान लाया	ऐ मेरी क़ौम	बेशक मैं	मैं डरता हूं	तुम पर	मानिंद	दिन के	(गुज़िश्ता) गिरोहों के

مِثْلَ	دَاْبِ	قَوْمِ	نُوْحٍ	وَّعَادٍ	وَّثَمُوْدَ	وَالَّذِيْنَ	مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ
मानिंद	हालत	क़ौमे	नूह	और आद	और समूद	और उनकी जो	बाद थे उनके

وَمَا	اللّٰهُ	يُرِيْدُ	ظُلْمًا	لِّلْعِبَادِ ﴿31﴾	وَيٰقَوْمِ	اِنِّيْٓ	اَخَافُ
और नहीं	अल्लाह	इरादा रखता	ज़ुल्म का	बंदों पर	और ऐ मेरी क़ौम	बेशक मैं	मैं डरता हूं

عَلَيْكُمْ	يَوْمَ التَّنَادِ ﴿32﴾	يَوْمَ	تُوَلُّوْنَ	مُدْبِرِيْنَ ۚ	مَا
तुम पर	एक दूसरे को पुकारने के दिन से	जिस दिन	तुम फिर जाओगे	पीठ फेरते हुए	नहीं (होगा)

لَكُمْ	مِّنَ اللّٰهِ	مِنْ عَاصِمٍ ۚ	وَمَنْ	يُّضْلِلِ	اللّٰهُ	فَمَا	لَهٗ
तुम्हारे लिए	अल्लाह से	कोई बचाने वाला	और जिसे	भटका दे	अल्लाह	तो नहीं	उसके लिए

مِنْ هَادٍ ﴿33﴾	وَلَقَدْ	جَآءَكُمْ	يُوْسُفُ	مِنْ قَبْلُ	بِالْبَيِّنٰتِ
कोई हिदायत देने वाला	और अलबत्ता तहक़ीक़	आया तुम्हारे पास	यूसुफ़	इससे पहले	साथ वाज़ेह दलाइल के

فَمَا زِلْتُمْ	فِيْ شَكٍّ	مِّمَّا	جَآءَكُمْ	بِهٖ ؕ	حَتّٰٓى	اِذَا	هَلَكَ
तो मुसलसल रहे तुम	शक में	उस चीज़ से जो	वो लाया तुम्हारे पास	उसे	यहां तक कि	जब	वो फ़ौत हो गया

قُلْتُمْ	لَنْ	يَّبْعَثَ	اللّٰهُ	مِنْ بَعْدِهٖ	رَسُوْلًا ؕ	كَذٰلِكَ	يُضِلُّ
कहा तुमने	हरगिज़ नहीं	भेजेगा	अल्लाह	उसके बाद	किसी रसूल को	इसी तरह	भटकाता है

اللّٰهُ	مَنْ	هُوَ	مُسْرِفٌ	مُّرْتَابُ ۨ ﴿34﴾	الَّذِيْنَ	يُجَادِلُوْنَ	فِيْٓ اٰيٰتِ
अल्लाह	उसे जो	हो वो	हद से बढ़ने वाला	शक में पड़ने वाला	वो लोग जो	झगड़ते हैं	आयात में

اللّٰهِ	بِغَيْرِ	سُلْطٰنٍ	اَتٰىهُمْ ؕ	كَبُرَ	مَقْتًا	عِنْدَ	اللّٰهِ
अल्लाह की	बग़ैर	किसी दलील के	जो आई हो उनके पास	बड़ी है	नाराज़गी की बात	नज़दीक	अल्लाह के

وَعِنْدَ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا ؕ	كَذٰلِكَ	يَطْبَعُ	اللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ
और नज़दीक	उनके जो	ईमान लाए	इसी तरह	मोहर लगा देता है	अल्लाह	ऊपर	हर (उस शख़्स के)

قَلْبِ	مُتَكَبِّرٍ	جَبَّارٍ ﴿35﴾	وَقَالَ	فِرْعَوْنُ	يٰهَامٰنُ	ابْنِ	لِيْ
दिल के	जो तकब्बुर करने वाला है	सरकश है	और कहा	फ़िरऔन ने	ऐ हामान	बना	मेरे लिए

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

صَرْحًا	لَّعَلِّيْٓ	اَبْلُغُ	الْاَسْبَابَ ﴿36﴾	اَسْبَابَ	السَّمٰوٰتِ	فَاَطَّلِعَ
एक बुलंद इमारत	ताकि मैं	मैं पहुँच सकूं	रास्तों पर	रास्तों पर	आसमान के	फिर मैं झांक कर देखूं

اِلٰٓى اِلٰهِ	مُوْسٰى	وَاِنِّيْ	لَاَظُنُّهٗ	كَاذِبًا ؕ	وَكَذٰلِكَ	زُيِّنَ
तरफ़ इलाह	मूसा के	और बेशक मैं	अलबत्ता मैं गुमान करता हूं उसे	झूठा	और इसी तरह	मुज़य्यन कर दिया गया

لِفِرْعَوْنَ	سُوْٓءُ	عَمَلِهٖ	وَصُدَّ	عَنِ السَّبِيْلِ ؕ	وَمَا	كَيْدُ
फ़िरऔन के लिए	बुरा	अमल उसका	और वो रोक दिया गया	रास्ते से	और नहीं	चाल

ع 4 10 9

فِرْعَوْنَ	اِلَّا	فِيْ تَبَابٍ ﴿37﴾ ع	وَقَالَ	الَّذِيْٓ	اٰمَنَ	يٰقَوْمِ	اتَّبِعُوْنِ
फ़िरऔन की	मगर	हलाकत में	और कहा	उसने जो	ईमान लाया	ऐ मेरी क़ौम	पैरवी करो मेरी

اَهْدِكُمْ	سَبِيْلَ	الرَّشَادِ ﴿38﴾ ج	يٰقَوْمِ	اِنَّمَا	هٰذِهِ	الْحَيٰوةُ
मैं दिखाऊंगा तुम्हें	रास्ता	भलाई का	ऐ मेरी क़ौम	बेशक	ये	ज़िंदगी

الدُّنْيَا	مَتَاعٌ ز	وَّاِنَّ	الْاٰخِرَةَ	هِيَ	دَارُ	الْقَرَارِ ﴿39﴾	مَنْ
दुनिया की	थोड़ा फ़ायदा है	और बेशक	आख़िरत	वो ही	घर है	क़रार का	जिसने

عَمِلَ	سَيِّئَةً	فَلَا	يُجْزٰٓى	اِلَّا	مِثْلَهَا ج	وَمَنْ	عَمِلَ
अमल किया	बुरा	तो ना	वो बदला दिया जाएगा	मगर	मानिंद उसी के	और जिसने	अमल किया

صَالِحًا	مِّنْ ذَكَرٍ	اَوْ	اُنْثٰى	وَهُوَ	مُؤْمِنٌ	فَاُولٰٓئِكَ	يَدْخُلُوْنَ
नेक	कोई मर्द हो	या	औरत	जब कि वो	मोमिन हो	तो यही लोग हैं	जो दाख़िल होंगे

الْجَنَّةَ	يُرْزَقُوْنَ	فِيْهَا	بِغَيْرِ	حِسَابٍ ﴿40﴾	وَيٰقَوْمِ	مَا	لِيْٓ
जन्नत में	वो रिज़्क़ दिए जाऐंगे	उसमें	बग़ैर	हिसाब के	और ऐ मेरी क़ौम	क्या है	मुझे

النصف

اَدْعُوْكُمْ	اِلَى النَّجٰوةِ	وَتَدْعُوْنَنِيْٓ	اِلَى النَّارِ ﴿41﴾ ؕ	تَدْعُوْنَنِيْ	لِاَكْفُرَ
मैं बुलाता हूं तुम्हें	तरफ़ निजात के	और तुम बुलाते हो मुझे	तरफ़ आग के	तुम बुलाते हो मुझे	कि मैं कुफ़्र करूं

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِاللّٰهِ	وَاُشْرِكَ	بِهٖ	مَا	لَيْسَ	لِيْ	بِهٖ	عِلْمٌ ز
साथ अल्लाह के	और मैं शरीक ठहराऊं	साथ उसके	जो	नहीं है	मुझे	उसका	कोई इल्म

وَّاَنَا	اَدْعُوْكُمْ	اِلَى	الْعَزِيْزِ	الْغَفَّارِ ﴿42﴾	لَا جَرَمَ	اَنَّمَا
और मैं	मैं बुलाता हूं तुम्हें	तरफ़	बहुत ज़बरदस्त के	बहुत बख़्शने वाले के	नहीं कोई शक	बेशक

تَدْعُوْنَنِيْٓ	اِلَيْهِ	لَيْسَ	لَهٗ	دَعْوَةٌ	فِي الدُّنْيَا	وَلَا
तुम बुलाते हो मुझे	जिस की तरफ़	नहीं है	उसके लिए	कोई पुकारा जाना	दुनिया में	और ना

فِي الْاٰخِرَةِ	وَاَنَّ	مَرَدَّنَآ	اِلَى اللّٰهِ	وَاَنَّ	الْمُسْرِفِيْنَ	هُمْ
आख़िरत में	और बेशक	पलटना हमारा	तरफ़ अल्लाह के है	और बेशक	जो हद से बढ़ने वाले हैं	वो ही हैं

اَصْحٰبُ	النَّارِ ﴿43﴾	فَسَتَذْكُرُوْنَ	مَآ	اَقُوْلُ	لَكُمْ ط	وَاُفَوِّضُ
साथी	आग के	पस अनक़रीब तुम याद करोगे	जो	मैं कह रहा हूं	तुम्हें	और मैं सुपुर्द करता हूं

اَمْرِيْٓ	اِلَى اللّٰهِ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	بَصِيْرٌۢ	بِالْعِبَادِ ﴿44﴾	فَوَقٰىهُ
अपना मामला	तरफ़ अल्लाह के	बेशक	अल्लाह	ख़ूब देखने वाला है	बंदों को	पस बचा लिया उसे

اللّٰهُ	سَيِّاٰتِ	مَا	مَكَرُوْا	وَحَاقَ	بِاٰلِ فِرْعَوْنَ	سُوْٓءُ
अल्लाह ने	बुराईयों से	उसकी जो	उन्होंने मकर किया	और घेर लिया	आले फ़िरऔन को	बुरे

الْعَذَابِ ﴿45﴾ ج	اَلنَّارُ	يُعْرَضُوْنَ	عَلَيْهَا	غُدُوًّا	وَّعَشِيًّا ج	وَيَوْمَ
अज़ाब ने	आग	वो पेश किए जाते हैं	उस पर	सुबह	और शाम	और जिस दिन

تَقُوْمُ	السَّاعَةُ قف	اَدْخِلُوْٓا	اٰلَ فِرْعَوْنَ	اَشَدَّ	الْعَذَابِ ﴿46﴾	وَاِذْ
क़ायम होगी	क़यामत	(कहा जाएगा) कि दाख़िल करो	आले फ़िरऔन को	शदीद तरीन	अज़ाब में	और जब

يَتَحَآجُّوْنَ	فِي النَّارِ	فَيَقُوْلُ	الضُّعَفٰٓؤُا	لِلَّذِيْنَ	اسْتَكْبَرُوْٓا
वो बाहम झगड़ेंगे	आग में	तो कहेंगे	कमज़ोर लोग	उन से जिन्होंने	तकब्बुर किया था

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِنَّا	كُنَّا	لَكُمْ	تَبَعًا	فَهَلْ	اَنْتُمْ	مُّغْنُوْنَ	عَنَّا
बेशक हम	थे हम	तुम्हारे	ताबे/पैरवी करने वाले	तो क्या	तुम	दूर करने वाले हो	हम से

نَصِيْبًا	مِّنَ النَّارِ ﴿47﴾	قَالَ	الَّذِيْنَ	اسْتَكْبَرُوْٓا	اِنَّا	كُلٌّ
कुछ हिस्सा	आग से	कहेंगे	वो जिन्होंने	तकब्बुर किया था	बेशक हम	सब ही

فِيْهَا	اِنَّ	اللّٰهَ	قَدْ	حَكَمَ	بَيْنَ	الْعِبَادِ ﴿48﴾	وَقَالَ
उसमें हैं	बेशक	अल्लाह	तहक़ीक़	फ़ैसला कर चुका है	दर्मियान	बंदों के	और कहेंगे

الَّذِيْنَ	فِى النَّارِ	لِخَزَنَةِ	جَهَنَّمَ	ادْعُوْا	رَبَّكُمْ	يُخَفِّفْ
वो लोग जो	आग में (होंगे)	दरबानों से	जहन्नम के	दुआ करो	अपने रब से	वो हल्का कर दे

عَنَّا	يَوْمًا	مِّنَ الْعَذَابِ ﴿49﴾	قَالُوْٓا	اَوَلَمْ	تَكُ	تَاْتِيْكُمْ
हम से	एक दिन	अज़ाब से	वो कहेंगे	क्या भला नहीं	थे	आए तुम्हारे पास

رُسُلُكُمْ	بِالْبَيِّنٰتِ ؕ	قَالُوْا	بَلٰى ؕ	قَالُوْا	وَمَا
रसूल तुम्हारे	साथ वाज़ेह दलाइल के	वो कहेंगे	क्यों नहीं	वो कहेंगे	और नहीं

دُعٰٓؤُا	الْكٰفِرِيْنَ	اِلَّا	فِىْ ضَلٰلٍ ﴿50﴾ ع	اِنَّا	لَنَنْصُرُ	رُسُلَنَا
दुआ	काफ़िरों की	मगर	गुमराही में	बेशक हम	अलबत्ता हम मदद करते हैं	अपने रसूलों की

ع 5 13 10

وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	فِى الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَيَوْمَ	يَقُوْمُ	الْاَشْهَادُ ﴿51﴾ لا
और उनकी जो	ईमान लाए हैं	ज़िंदगी में	दुनिया की	और जिस दिन	खड़े होंगे	गवाह

يَوْمَ	لَا يَنْفَعُ	الظّٰلِمِيْنَ	مَعْذِرَتُهُمْ	وَلَهُمُ	اللَّعْنَةُ	وَلَهُمْ
जिस दिन	ना नफ़ा देगी	ज़ालिमों को	मअज़रत उनकी	और उनके लिए है	लाअनत	और उनके लिए है

سُوْٓءُ	الدَّارِ ﴿52﴾	وَلَقَدْ	اٰتَيْنَا	مُوْسَى	الْهُدٰى	وَاَوْرَثْنَا
बदतरीन	घर	और अलबत्ता तहक़ीक़	दी हमने	मूसा को	हिदायत	और वारिस बनाया हमने

HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ	الْكِتٰبَ ﴿53﴾ لا	هُدًى	وَّذِكْرٰى	لِاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿54﴾
बनी इस्राईल को	किताब का	जो हिदायत	और नसीहत थी	अक़्ल वालों के लिए

فَاصْبِرْ	اِنَّ	وَعْدَ	اللّٰهِ	حَقٌّ	وَّاسْتَغْفِرْ	لِذَنْۢبِكَ	وَسَبِّحْ
पस सब्र कीजिए	बेशक	वादा	अल्लाह का	सच्चा है	और बख़्शिश तलब कीजिए	अपने गुनाह की	और तस्बीह कीजिए

بِحَمْدِ	رَبِّكَ	بِالْعَشِيِّ	وَالْاِبْكَارِ ﴿55﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	يُجَادِلُوْنَ
साथ हम्द के	अपने रब की	शाम के वक़्त	और सुबह के वक़्त	बेशक	वो लोग जो	झगड़ते हैं

فِيْٓ اٰيٰتِ	اللّٰهِ	بِغَيْرِ	سُلْطٰنٍ	اَتٰىهُمْ لا	اِنْ	فِيْ صُدُوْرِهِمْ
आयात में	अल्लाह की	बग़ैर	किसी दलील के	जो आई हो उनके पास	नहीं	उनके सीनों में

اِلَّا	كِبْرٌ	مَّا	هُمْ	بِبَالِغِيْهِ ج	فَاسْتَعِذْ	بِاللّٰهِ ط	اِنَّهٗ	هُوَ
मगर	बड़ाई	नहीं	वो	पहुंचने वाले उसे	पस पनाह तलब कीजिए	अल्लाह की	बेशक वो	वही है

السَّمِيْعُ	الْبَصِيْرُ ﴿56﴾	لَخَلْقُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	اَكْبَرُ	مِنْ خَلْقِ
ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब देखने वाला	यक़ीनन पैदा करना	आसमानों	और ज़मीन का	ज़्यादा बड़ा है	पैदा करने से

النَّاسِ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿57﴾	وَمَا	يَسْتَوِي
इंसानों के	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं वो इल्म रखते	और नहीं	बराबर हो सकते

الْاَعْمٰى	وَالْبَصِيْرُ لا	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	وَلَا
अंधा	और देखने वाला	और वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	और ना

الْمُسِيْٓءُ ط	قَلِيْلًا مَّا	تَتَذَكَّرُوْنَ ﴿58﴾	اِنَّ	السَّاعَةَ	لَاٰتِيَةٌ
बदकार	कितना कम	तुम नसीहत पकड़ते हो	बेशक	क़यामत	अलबत्ता आने वाली है

لَا رَيْبَ	فِيْهَا	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿59﴾	وَقَالَ
नहीं कोई शक	इसमें	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं वो ईमान रखते	और कहा

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رَبُّكُمُ	ادْعُوْنِيْٓ	اَسْتَجِبْ	لَكُمْ ؕ	اِنَّ	الَّذِيْنَ	يَسْتَكْبِرُوْنَ
तुम्हारे रब ने	दुआ करो मुझसे	मैं क़ुबूल करुंगा	तुम्हारे लिए	बेशक	वो जो	तकब्बुर करते हैं

عَنْ عِبَادَتِيْ	سَيَدْخُلُوْنَ	جَهَنَّمَ	دٰخِرِيْنَ ﴿60﴾ ع	اَللّٰهُ	الَّذِيْ	جَعَلَ
मेरी इबादत से	अनक़रीब वो दाख़िल होंगे	जहन्नम में	ज़लील व ख़्वार हो कर	अल्लाह	वो है जिसने	बनाया

ع 6 10 11

لَكُمُ	الَّيْلَ	لِتَسْكُنُوْا	فِيْهِ	وَالنَّهَارَ	مُبْصِرًا ؕ	اِنَّ	اللّٰهَ
तुम्हारे लिए	रात को	ताकि तुम सुकून पाओ	उसमें	और दिन को	रौशन	बेशक	अल्लाह

لَذُوْ فَضْلٍ	عَلَى النَّاسِ	وَلٰكِنَّ	اَكْثَرَ	النَّاسِ	لَا يَشْكُرُوْنَ ﴿61﴾
अलबत्ता फ़ज़्ल वाला है	लोगों पर	और लेकिन	अक्सर	लोग	नहीं वो शुक्र करते

ذٰلِكُمُ	اللّٰهُ	رَبُّكُمْ	خَالِقُ	كُلِّ	شَيْءٍ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا
ये है	अल्लाह	रब तुम्हारा	पैदा करने वाला	हर	चीज़ का	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर

وقف لازم

هُوَ ۚ	فَاَنّٰى	تُؤْفَكُوْنَ ﴿62﴾	كَذٰلِكَ	يُؤْفَكُ	الَّذِيْنَ	كَانُوْا	بِاٰيٰتِ
वही	तो कहां से	तुम फेरे जाते हो	इसी तरह	फेरे जाते हैं	वो जो	हैं वो	आयात से

اللّٰهِ	يَجْحَدُوْنَ ﴿63﴾	اَللّٰهُ	الَّذِيْ	جَعَلَ	لَكُمُ	الْاَرْضَ	قَرَارًا
अल्लाह की	वो इंकार करते	अल्लाह	वो है जिसने	बनाया	तुम्हारे लिए	ज़मीन को	क़रारगाह

وَّالسَّمَآءَ	بِنَآءً	وَّصَوَّرَكُمْ	فَاَحْسَنَ	صُوَرَكُمْ	وَرَزَقَكُمْ
और आसमान को	छत	और उसने सूरतें बनाईं तुम्हारी	तो उसने अच्छी बनाईं	सूरतें तुम्हारी	और उसने रिज़्क़ दिया तुम्हें

مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ	ذٰلِكُمُ	اللّٰهُ	رَبُّكُمْ ۚ	فَتَبٰرَكَ	اللّٰهُ
पाकीज़ा चीज़ों से	ये है	अल्लाह	रब तुम्हारा	पस बाबरकत है	अल्लाह

الْعٰلَمِيْنَ ﴿64﴾	هُوَ	الْحَيُّ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ
तमाम जहानों का	वो	ज़िन्दा है	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वही

فَادْعُوْهُ
पस पुकारो उसे

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُخْلِصِيْنَ	لَهُ	الدِّيْنَ ط	اَلْحَمْدُ	لِلّٰهِ	رَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿65﴾
ख़ालिस करने वाले होकर	उसी के लिए	दीन को	सब तारीफ़	अल्लाह के लिए है	जो रब है	तमाम जहानों का

قُلْ	اِنِّىْ	نُهِيْتُ	اَنْ	اَعْبُدَ	الَّذِيْنَ	تَدْعُوْنَ	مِنْ دُوْنِ
कह दीजिए	बेशक मैं	मैं रोका गया हूं	कि	मैं इबादत करुं	उनकी जिन्हें	तुम पुकारते हो	सिवाए

اللّٰهِ	لَمَّا	جَآءَنِىَ	الْبَيِّنٰتُ	مِنْ رَّبِّىْ ز	وَاُمِرْتُ	اَنْ
अल्लाह के	जब कि	आ गईं मेरे पास	वाज़ेह निशानियां	मेरे रब की तरफ़ से	और हुक्म दिया गया है मुझे	कि

اُسْلِمَ	لِرَبِّ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿66﴾	هُوَ	الَّذِىْ	خَلَقَكُمْ	مِّنْ تُرَابٍ
मैं फ़रमांबरदार हो जाऊँ	रब के लिए	तमाम जहानों के	वो	वो ही है जिसने	पैदा किया तुम्हें	मिट्टी से

ثُمَّ	مِنْ نُّطْفَةٍ	ثُمَّ	مِنْ عَلَقَةٍ	ثُمَّ	يُخْرِجُكُمْ	طِفْلًا
फिर	नुत्फ़े से	फिर	जमे हुए ख़ून से	फिर	वो निकालता है तुम्हें	बच्चा (बनाकर)

ثُمَّ	لِتَبْلُغُوْٓا	اَشُدَّكُمْ	ثُمَّ	لِتَكُوْنُوْا	شُيُوْخًا ج	وَمِنْكُمْ
फिर	ताकि तुम पहुंच जाओ	अपनी जवानी को	फिर	ताकि तुम हो जाओ	बूढ़े	और तुम में से

مَّنْ	يُّتَوَفّٰى	مِنْ قَبْلُ	وَلِتَبْلُغُوْٓا	اَجَلًا	مُّسَمًّى	وَّلَعَلَّكُمْ
कोई है जो	फ़ौत कर दिया जाता है	इससे पहले	और ताकि तुम पहुंचो	एक वक़्त को	मुक़र्रर	और ताकि तुम

تَعْقِلُوْنَ ﴿67﴾	هُوَ	الَّذِىْ	يُحْىٖ	وَيُمِيْتُ ج	فَاِذَا	قَضٰٓى
तुम अक़्ल से काम लो	वो ही है	जो	ज़िंदा करता है	और वो मौत देता है	फिर जब	वो फ़ैसला करता है

ع 7 8 12

اَمْرًا	فَاِنَّمَا	يَقُوْلُ	لَهٗ	كُنْ	فَيَكُوْنُ ﴿68﴾ ع	اَلَمْ	تَرَ
किसी काम का	तो बेशक	वो कहता है	उसे	हो जा	तो वो हो जाता है	क्या नहीं	आपने देखा

معانقة 13

اِلَى الَّذِيْنَ	يُجَادِلُوْنَ	فِىْٓ اٰيٰتِ	اللّٰهِ ط	اَنّٰى	يُصْرَفُوْنَ ﴿69﴾ ج صلے	الَّذِيْنَ
तरफ़ उनके जो	झगड़ते हैं	आयात में	अल्लाह की	कहां से	वो फेरे जाते हैं	वो जिन्होंने

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION

كَذَّبُوْا	بِالْكِتٰبِ	وَبِمَآ	اَرْسَلْنَا	بِهٖ	رُسُلَنَا ۚ	فَسَوْفَ
झुठलाया	किताब को	और उसे जो	भेजा हमने	साथ उसके	अपने रसूलों को	तो अनक़रीब

يَعْلَمُوْنَ ﴿70﴾	اِذِ	الْاَغْلٰلُ	فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ	وَالسَّلٰسِلُ ۭ	يُسْحَبُوْنَ ﴿71﴾
वो जान लेंगे	जब	तौक़ होंगे	उनकी गर्दनों में	और ज़ंजीरें होंगी	वो घसीटे जाऐंगे

فِي الْحَمِيْمِ ۠	ثُمَّ	فِي النَّارِ	يُسْجَرُوْنَ ﴿72﴾	ثُمَّ	قِيْلَ	لَهُمْ
खौलते पानी में	फिर	आग में	वो झोंके जाऐंगे	फिर	कहा जाएगा	उन्हें

اَيْنَ	مَا	كُنْتُمْ	تُشْرِكُوْنَ ﴿73﴾	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ ۭ	قَالُوْا	ضَلُّوْا
कहां हैं	वो जिन्हें	थे तुम	तुम शरीक ठहराते	सिवाए	अल्लाह के	वो कहेंगे	वो गुम हो गए

عَنَّا	بَلْ	لَّمْ	نَكُنْ	نَّدْعُوْا	مِنْ قَبْلُ	شَيْـًٔا ۭ	كَذٰلِكَ
हमसे	बल्कि	ना	थे हम	हम पुकारते	इससे पहले	किसी भी चीज़ को	इसी तरह

يُضِلُّ	اللّٰهُ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿74﴾	ذٰلِكُمْ	بِمَا	كُنْتُمْ	تَفْرَحُوْنَ
भटकाता है	अल्लाह	काफ़िरों को	ये तुम्हारा (अंजाम)	बवजह उसके जो	थे तुम	तुम ख़ुश होते

فِي الْاَرْضِ	بِغَيْرِ	الْحَقِّ	وَبِمَا	كُنْتُمْ	تَمْرَحُوْنَ ﴿75﴾	اُدْخُلُوْٓا
ज़मीन में	बग़ैर	हक़ के	और बवजह उसके जो	थे तुम	तुम इतराते	दाख़िल हो जाओ

اَبْوَابَ	جَهَنَّمَ	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ۚ	فَبِئْسَ	مَثْوَى	الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿76﴾
दरवाज़ों में	जहन्नम के	हमेशा रहने वाले	उसमें	तो कितना बुरा है	ठिकाना	तकब्बुर करने वालों का

فَاصْبِرْ	اِنَّ	وَعْدَ	اللّٰهِ	حَقٌّ ۚ	فَاِمَّا	نُرِيَنَّكَ	بَعْضَ
पस सब्र कीजिए	बेशक	वादा	अल्लाह का	सच्चा है	फिर अगर	हम दिखाऐं आपको	बाज़

الَّذِيْ	نَعِدُهُمْ	اَوْ	نَتَوَفَّيَنَّكَ	فَاِلَيْنَا	يُرْجَعُوْنَ ﴿77﴾	وَلَقَدْ
वो चीज़ जो	हम वादा करते हैं उनसे	या	हम फ़ौत कर दें आपको	तो तरफ़ हमारे ही	वो लौटाए जाऐंगे	और अलबत्ता तहक़ीक़

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَرْسَلْنَا	رُسُلًا	مِّنْ قَبْلِكَ	مِنْهُمْ	مَّنْ	قَصَصْنَا	عَلَيْكَ
भेजे हमने	कई रसूल	आपसे पहले	उनमें से बाज़ वो हैं	जिन्हें	बयान किया हमने	आप पर

وَمِنْهُمْ	مَّنْ	لَّمْ	نَقْصُصْ	عَلَيْكَ ؕ	وَمَا	كَانَ	لِرَسُوْلٍ
और उनमें से बाज़ वो हैं	जिन्हें	नहीं	हमने बयान किया	आप पर	और नहीं	है	किसी रसूल के लिए

اَنْ	يَّاْتِيَ	بِاٰيَةٍ	اِلَّا	بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ	فَاِذَا	جَآءَ	اَمْرُ
कि	वो ले आए	कोई निशानी	मगर	अल्लाह के इज़्न से	फिर जब	आ गया	हुक्म

ع 8 10 13

اللّٰهِ	قُضِيَ	بِالْحَقِّ	وَخَسِرَ	هُنَالِكَ	الْمُبْطِلُوْنَ ﴿78﴾ ع	اَللّٰهُ
अल्लाह का	फ़ैसला कर दिया गया	साथ हक़ के	और ख़सारे में पड़ गए	उस वक़्त	अहले बातिल	अल्लाह

الَّذِيْ	جَعَلَ	لَكُمُ	الْاَنْعَامَ	لِتَرْكَبُوْا	مِنْهَا	وَمِنْهَا
वो है जिसने	बनाए	तुम्हारे लिए	मवेशी	ताकि तुम सवारी करो	उनमे से बाज़ पर	और उनमें से कुछ

تَاْكُلُوْنَ ﴿79﴾ ۙ	وَلَكُمْ	فِيْهَا	مَنَافِعُ	وَلِتَبْلُغُوْا	عَلَيْهَا	حَاجَةً
तुम खाते हो	और तुम्हारे लिए	उनमें	फ़ायदे हैं	और ताकि तुम पहुंचो	उन पर	हाजत को

فِيْ صُدُوْرِكُمْ	وَعَلَيْهَا	وَعَلَى الْفُلْكِ	تُحْمَلُوْنَ ﴿80﴾ ؕ	وَيُرِيْكُمْ	اٰيٰتِهٖ ۖ
जो तुम्हारे सीनों में है	और उन पर	और कश्तियों पर	तुम सवार किए जाते हो	और वो दिखाता है तुम्हें	निशानियां अपनी

فَاَيَّ	اٰيٰتِ اللّٰهِ	تُنْكِرُوْنَ ﴿81﴾	اَفَلَمْ	يَسِيْرُوْا	فِي الْاَرْضِ
पस कौन सी	अल्लाह की निशानियों का	तुम इंकार करोगे	क्या भला नहीं	वो चले फिरे	ज़मीन में

فَيَنْظُرُوْا	كَيْفَ	كَانَ	عَاقِبَةُ	الَّذِيْنَ	مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	كَانُوْٓا
तो वो देखते	कैसा	हुआ	अंजाम	उन लोगों का जो	उनसे पहले थे	थे वो

اَكْثَرَ	مِنْهُمْ	وَاَشَدَّ	قُوَّةً	وَّاٰثَارًا	فِي الْاَرْضِ	فَمَآ	اَغْنٰى
अक्सर	उनसे	और ज़्यादा शदीद	क़ुव्वत में	और आसार में	ज़मीन में	पस ना	काम आया

AL FUDAIL INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَنْهُمْ	مَّا	كَانُوْا	يَكْسِبُوْنَ ﴿82﴾	فَلَمَّا	جَآءَتْهُمْ	رُسُلُهُمْ
उन्हें	जो कुछ	थे वो	वो कमाई करते	तो जब	आए उनके पास	रसूल उनके

بِالْبَيِّنٰتِ	فَرِحُوْا	بِمَا	عِنْدَهُمْ	مِّنَ الْعِلْمِ	وَحَاقَ	بِهِمْ
साथ वाज़ेह दलाइल के	तो वो ख़ुश हुए	उस पर जो	उनके पास था	इल्म में से	और घेर लिया	उन्हें

مَّا	كَانُوْا	بِهٖ	يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿83﴾	فَلَمَّا	رَاَوْا	بَاْسَنَا
उसने जो	थे वो	जिसका	वो मज़ाक़ उड़ाते	फिर जब	उन्होंने देखा	हमारा अज़ाब

قَالُوْٓا	اٰمَنَّا	بِاللّٰهِ	وَحْدَهٗ	وَكَفَرْنَا	بِمَا	كُنَّا	بِهٖ
उन्होंने कहा	ईमान लाए हम	अल्लाह पर	अकेले उसी पर	और इंकार किया हमने	उनका जिन्हें	थे हम	साथ उसके

لَمَّا	اِيْمَانُهُمْ	يَنْفَعُهُمْ	يَكُ	فَلَمْ	مُشْرِكِيْنَ ﴿84﴾
जब	ईमान उनका	कि नफ़ा देता उन्हें	था	पस ना	शरीक करते

رَاَوْا	بَاْسَنَا ؕ	سُنَّتَ	اللّٰهِ	الَّتِيْ	قَدْ	خَلَتْ
उन्होंने देखा	अज़ाब हमारा	तरीक़ा है	अल्लाह का	वो जो	तहक़ीक़	गुज़र चुका

فِيْ عِبَادِهٖ ۚ	وَخَسِرَ	هُنَالِكَ	الْكٰفِرُوْنَ ﴿85﴾ ع
उसके बंदो में	और ख़सारे में पड़ गए	उस वक़्त	काफ़िर

ع 9 7 14

سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ 61 — 41

اٰيَاتُهَا: 54 — رُكُوْعَاتُهَا: 6

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿1﴾ ۚ	تَنْزِيْلٌ	مِّنَ الرَّحْمٰنِ	الرَّحِيْمِ ﴿2﴾ ۚ	كِتٰبٌ	فُصِّلَتْ
हٰमीम	नाज़िल करदा है	बहुत मेहरबान की तरफ़ से	जो निहायत रहम करने वाला है	एक ऐसी किताब	खोल कर बयान की गई हैं

اٰيٰتُهٗ	قُرْاٰنًا	عَرَبِيًّا	لِّقَوْمٍ	يَّعْلَمُوْنَ ﴿3﴾ لا	بَشِيْرًا
आयात उसकी	क़ुरआन है	अरबी	उन लोगों के लिए	जो इल्म रखते हैं	ख़ुशख़बरी देने वाला

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّنَذِيْرًا ۚ	فَاَعْرَضَ	اَكْثَرُهُمْ	فَهُمْ	لَا يَسْمَعُوْنَ ④	وَقَالُوْا
और डराने वाला	तो ऐराज़ किया	उनके अक्सर ने	पस वो	नहीं वो सुनते	और उन्होंने कहा

قُلُوْبُنَا	فِيْٓ اَكِنَّةٍ	مِّمَّا	تَدْعُوْنَآ	اِلَيْهِ	وَفِيْٓ اٰذَانِنَا	وَقْرٌ
दिल हमारे	पर्दों में हैं	उससे जो	तुम पुकारते हो हमें	तरफ़ जिसके	और हमारे कानों में	एक बोझ है

وَّمِنْۢ بَيْنِنَا	وَبَيْنِكَ	حِجَابٌ	فَاعْمَلْ	اِنَّنَا	عٰمِلُوْنَ ⑤
और दर्मियान हमारे	और दर्मियान तुम्हारे	हिजाब है	पस अमल करो	बेशक हम भी	अमल करने वाले हैं

الثلثة

قُلْ	اِنَّمَآ	اَنَا	بَشَرٌ	مِّثْلُكُمْ	يُوْحٰٓى	اِلَيَّ	اَنَّمَآ
कह दीजिए	बेशक	मैं	एक इंसान हूं	तुम जैसा	वही की जाती है	मेरी तरफ़	बेशक

اِلٰهُكُمْ	اِلٰهٌ	وَّاحِدٌ	فَاسْتَقِيْمُوْٓا	اِلَيْهِ	وَاسْتَغْفِرُوْهُ ؕ	وَوَيْلٌ
इलाह तुम्हारा	इलाह है	एक ही	पस सीधे रहो	तरफ़ उसके	और बख़्शिश मांगो उससे	और हलाकत है

لِّلْمُشْرِكِيْنَ ⑥ۙ	الَّذِيْنَ	لَا يُؤْتُوْنَ	الزَّكٰوةَ	وَهُمْ	بِالْاٰخِرَةِ	هُمْ
मुशरिकों के लिए	वो जो	नहीं वो अदा करते	ज़कात	और वो	आख़िरत के	वो

كٰفِرُوْنَ ⑦	اِنَّ	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ	لَهُمْ
इंकारी हैं	बेशक	वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक	उनके लिए

ع 1 8 15

اَجْرٌ	غَيْرُ	مَمْنُوْنٍ ⑧ ع	قُلْ	اَئِنَّكُمْ	لَتَكْفُرُوْنَ	بِالَّذِيْ
अज्र है	ना	ख़त्म होने वाला	कह दीजिए	क्या बेशक तुम	अलबत्ता तुम कुफ़्र करते हो	उसका जिसने

خَلَقَ	الْاَرْضَ	فِيْ يَوْمَيْنِ	وَتَجْعَلُوْنَ	لَهٗٓ	اَنْدَادًا ؕ	ذٰلِكَ
पैदा किया	ज़मीन को	दो दिन में	और तुम बनाते हो	उसके लिए	कुछ शरीक	वो है

رَبُّ	الْعٰلَمِيْنَ ⑨ ۚ	وَجَعَلَ	فِيْهَا	رَوَاسِيَ	مِنْ فَوْقِهَا	وَبٰرَكَ
रब	तमाम जहानों का	और उसने गाड़ दिया	उसमें	पहाड़ों को	उसके ऊपर से	और बरकत डाली

INTERNATIONAL HUDA WELFARE FOUNDATION

فِيْهَا	وَقَدَّرَ	فِيْهَآ	اَقْوَاتَهَا	فِيْٓ اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ؕ	سَوَآءً
उसमें	और अंदाज़े से रखा	उसमें	उसकी ग़िज़ाओं को	चार दिनों में	बराबर/यकसां हैं

لِّلسَّآئِلِيْنَ ⑩	ثُمَّ	اسْتَوٰٓى	اِلَى السَّمَآءِ	وَهِيَ	دُخَانٌ	فَقَالَ
सवाल करने वालों के लिए	फिर	वो मुतावज्जेह हुआ	तरफ़ आसमान के	और वो	एक धुआं था	तो उसने कहा

لَهَا	وَلِلْاَرْضِ	ائْتِيَا	طَوْعًا	اَوْ	كَرْهًا ؕ	قَالَتَآ	اَتَيْنَا
उससे	और ज़मीन से	दोनों आ जाओ	ख़ुशी से	या	नाख़ुशी से	दोनों ने कहा	आ गए हम

طَآئِعِيْنَ ⑪	فَقَضٰىهُنَّ	سَبْعَ	سَمٰوٰتٍ	فِيْ يَوْمَيْنِ	وَاَوْحٰى
ख़ुश होकर	तो उसने पूरा बना दिया उन्हें	सात	आसमान	दो दिनों में	और उसने वही कर दिया

فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ	اَمْرَهَا ؕ	وَزَيَّنَّا	السَّمَآءَ	الدُّنْيَا	بِمَصَابِيْحَ ۖ
हर आसमान में	काम उसका	और मुज़य्यन किया हमने	आसमाने	दुनिया को	साथ चिराग़ों के

وَحِفْظًا ؕ	ذٰلِكَ	تَقْدِيْرُ	الْعَزِيْزِ	الْعَلِيْمِ ⑫	فَاِنْ	اَعْرَضُوْا
और हिफ़ाज़त के लिए	ये	अंदाज़ा है	बहुत ज़बरदस्त का	ख़ूब इल्म वाले का	फिर अगर	वो मुंह मोड़ लें

فَقُلْ	اَنْذَرْتُكُمْ	صٰعِقَةً	مِّثْلَ	صٰعِقَةِ	عَادٍ	وَّثَمُوْدَ ؕ ⑬
तो कह दीजिए	डराता हूं मैं तुम्हें	बिजली की कड़क से	मानिंद	बिजली की कड़क	आद	और समूद की

اِذْ	جَآءَتْهُمُ	الرُّسُلُ	مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ	وَمِنْ خَلْفِهِمْ	اَلَّا
जब	आए उनके पास	कई रसूल	उनके आगे से	और उनके पीछे से	कि ना

تَعْبُدُوْٓا	اِلَّا	اللّٰهَ ؕ	قَالُوْا	لَوْ	شَآءَ	رَبُّنَا	لَاَنْزَلَ
तुम इबादत करो	मगर	अल्लाह की	उन्होंने कहा	अगर	चाहता	रब हमारा	अलबत्ता वो उतार देता

مَلٰٓئِكَةً	فَاِنَّا	بِمَآ	اُرْسِلْتُمْ	بِهٖ	كٰفِرُوْنَ ⑭	فَاَمَّا	عَادٌ
फ़रिश्ते	तो बेशक हम	उसका जो	भेजे गए हो तुम	साथ इसके	इन्कार करने वाले हैं	तो रहे	आद

AL HIDAYA WELFARE FOUNDATION INTERNATIONAL

وَجُلُوْدُهُمْ	بِمَا	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿20﴾	وَقَالُوْا	لِجُلُوْدِهِمْ	لِمَ
और जिल्दें उनकी	बवजह उसके जो	थे वो	वो अमल करते	और वो कहेंगे	अपनी जिल्दों को	क्यों

شَهِدْتُّمْ	عَلَيْنَا ؕ	قَالُوْٓا	اَنْطَقَنَا	اللّٰهُ	الَّذِيْٓ	اَنْطَقَ	كُلَّ
गवाही दी तुमने	ख़िलाफ़ हमारे	वो कहेंगी	बुलवाया हमें	अल्लाह ने	वो जिसने	बुलवाया	हर

شَيْءٍ	وَّهُوَ	خَلَقَكُمْ	اَوَّلَ	مَرَّةٍ	وَّاِلَيْهِ	تُرْجَعُوْنَ ﴿21﴾	وَمَا
चीज़ को	और वो ही है	जिसने पैदा किया तुम्हें	पहली	बार	और तरफ़ उसी के	तुम लौटाए जाओगे	और नहीं

كُنْتُمْ	تَسْتَتِرُوْنَ	اَنْ	يَّشْهَدَ	عَلَيْكُمْ	سَمْعُكُمْ	وَلَآ
थे तुम	तुम छुपते (इस बात से)	कि	गवाही देंगे	तुम पर	कान तुम्हारे	और ना

اَبْصَارُكُمْ	وَلَا	جُلُوْدُكُمْ	وَلٰكِنْ	ظَنَنْتُمْ	اَنَّ	اللّٰهَ	لَا يَعْلَمُ
आंखें तुम्हारी	और ना	जिल्दें तुम्हारी	और लेकिन	गुमान किया तुमने	बेशक	अल्लाह	नहीं वो जानता

كَثِيْرًا	مِّمَّا	تَعْمَلُوْنَ ﴿22﴾	وَذٰلِكُمْ	ظَنُّكُمُ	الَّذِيْ	ظَنَنْتُمْ
बहुत कुछ	उसमें से जो	तुम अमल करते हो	और ये	गुमान तुम्हारा	वो जो	गुमान किया तुमने

بِرَبِّكُمْ	اَرْدٰىكُمْ	فَاَصْبَحْتُمْ	مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿23﴾	فَاِنْ	يَّصْبِرُوْا
अपने रब के बारे में	उसने हलाक कर दिया तुम्हें	तो हो गए तुम	ख़सारा पाने वालों में से	फिर अगर	वो सब्र करें

فَالنَّارُ	مَثْوًى	لَّهُمْ ۚ	وَاِنْ	يَّسْتَعْتِبُوْا	فَمَا	هُمْ
तो आग	ठिकाना है	उनके लिए	और अगर	वो माफ़ी तलब करेंगे	तो नहीं	वो

مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ﴿24﴾	وَقَيَّضْنَا	لَهُمْ	قُرَنَآءَ	فَزَيَّنُوْا	لَهُمْ
उज़्र क़ुबूल किए जाने वालों में से	और मुक़र्रर किए हमने	उनके लिए	कुछ साथी	तो उन्होंने ख़ुशनुमा बना दिया	उनके लिए

مَّا	بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ	وَمَا	خَلْفَهُمْ	وَحَقَّ	عَلَيْهِمُ	الْقَوْلُ
जो कुछ	उनके सामने था	और जो कुछ	उनके पीछे था	और साबित हो गई	उन पर	बात

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فَاسْتَكْبَرُوْا	فِى الْاَرْضِ	بِغَيْرِ	الْحَقِّ	وَقَالُوْا	مَنْ	اَشَدُّ
पस उन्होंने तकब्बुर किया	ज़मीन में	बग़ैर	हक़ के	और उन्होंने कहा	कौन	ज़्यादा शदीद है

مِنَّا	قُوَّةً ؕ	اَوَلَمْ	يَرَوْا	اَنَّ	اللّٰهَ	الَّذِىْ	خَلَقَهُمْ
हमसे	क़ुव्वत में	क्या भला नहीं	उन्होंने देखा	बेशक	अल्लाह	वो है जिसने	पैदा किया उन्हें

هُوَ	اَشَدُّ	مِنْهُمْ	قُوَّةً ؕ	وَكَانُوْا	بِاٰيٰتِنَا	يَجْحَدُوْنَ ﴿15﴾
वो	ज़्यादा शदीद है	उनसे	क़ुव्वत में	और थे वो	हमारी आयात का	वो इंकार करते

فَاَرْسَلْنَا	عَلَيْهِمْ	رِيْحًا	صَرْصَرًا	فِىْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ	لِّنُذِيْقَهُمْ
तो भेजी हमने	उन पर	एक हवा	तुंद व तेज़	नहूसत के दिनों में	ताकि हम चखाऐं उन्हें

عَذَابَ	الْخِزْىِ	فِى الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا ؕ	وَلَعَذَابُ	الْاٰخِرَةِ	اَخْزٰى
अज़ाब	रुस्वाई का	ज़िंदगी में	दुनिया की	और यक़ीनन अज़ाब	आख़िरत का	ज़्यादा रुस्वाकुन है

وَهُمْ	لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿16﴾	وَاَمَّا	ثَمُوْدُ	فَهَدَيْنٰهُمْ	فَاسْتَحَبُّوا
और वो	ना वो मदद किए जाऐंगे	और रहे	समूद	तो हिदायत दी हमने उन्हें	तो उन्होंने पसंद किया

الْعَمٰى	عَلَى الْهُدٰى	فَاَخَذَتْهُمْ	صٰعِقَةُ	الْعَذَابِ الْهُوْنِ	بِمَا
अंधेपन को	हिदायत पर	तो पकड़ लिया उन्हें	बिजली की कड़क ने	ज़िल्लत वाले अज़ाब की	बवजह उसके जो

كَانُوْا	يَكْسِبُوْنَ ﴿17﴾ ج	وَنَجَّيْنَا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَكَانُوْا	يَتَّقُوْنَ ﴿18﴾ ع
थे वो	वो कमाई करते	और निजात दी हमने	उन्हें जो	ईमान लाए	और थे वो	वो डरते

وَيَوْمَ	يُحْشَرُ	اَعْدَآءُ	اللّٰهِ	اِلَى النَّارِ	فَهُمْ	يُوْزَعُوْنَ ﴿19﴾
और जिस दिन	इकट्ठे किए जाऐंगे	दुश्मन	अल्लाह के	तरफ़ आग के	तो वो	वो रोके जाऐंगे

حَتّٰٓى	اِذَا مَا	جَآءُوْهَا	شَهِدَ	عَلَيْهِمْ	سَمْعُهُمْ	وَاَبْصَارُهُمْ
यहां तक कि	जैसे ही	वो आऐंगे उसके पास	गवाही देंगे	ख़िलाफ़ उनके	कान उनके	और निगाहें उनकी

ع 2 10 16

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيْٓ اُمَمٍ	قَدْ	خَلَتْ	مِنْ قَبْلِهِمْ	مِّنَ الْجِنِّ	وَالْاِنْسِ ۚ	اِنَّهُمْ
उम्मतों में	तहक़ीक़	जो गुज़र चुकीं	उनसे पहले	जिन्नों में से	और इंसानों में से	बेशक वो

ع 3 7 17

كَانُوْا	خٰسِرِيْنَ ﴿25﴾ ع	وَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	لَا تَسْمَعُوْا	لِهٰذَا
थे वो	ख़सारा पाने वाले	और कहा	उन लोगों ने जिन्होंने	कुफ़्र किया	ना तुम सुनो	इस

الْقُرْاٰنِ	وَالْغَوْا	فِيْهِ	لَعَلَّكُمْ	تَغْلِبُوْنَ ﴿26﴾	فَلَنُذِيْقَنَّ
क़ुरआन को	बल्कि ग़ुल मचाओ	इसमें	ताकि तुम	तुम ग़ालिब आ जाओ	पस अलबत्ता हम ज़रूर चखाऐंगे

الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	عَذَابًا	شَدِيْدًا ۙ	وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ	اَسْوَاَ
उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया	अज़ाब	शदीद	और अलबत्ता हम ज़रूर बदला देंगे उन्हें	बदतरीन

الَّذِيْ	كَانُوْا	يَعْمَلُوْنَ ﴿27﴾	ذٰلِكَ	جَزَآءُ	اَعْدَآءِ	اللّٰهِ	النَّارُ ۚ
उसका जो	थे वो	वो अमल करते	ये	बदला है	दुश्मनों का	अल्लाह के	आग का

لَهُمْ	فِيْهَا	دَارُ	الْخُلْدِ ؕ	جَزَآءً	بِمَا	كَانُوْا	بِاٰيٰتِنَا
उनके लिए है	उसमें	घर	हमेशगी का	बदला है	बवजह उसके जो	थे वो	हमारी आयात का

يَجْحَدُوْنَ ﴿28﴾	وَقَالَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	رَبَّنَآ	اَرِنَا	الَّذَيْنِ
वो इन्कार करते	और कहेंगे	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	ऐ हमारे रब	दिखा हमें	वो दोनों जिन्होंने

اَضَلّٰنَا	مِنَ الْجِنِّ	وَالْاِنْسِ	نَجْعَلْهُمَا	تَحْتَ	اَقْدَامِنَا
भटकाया हमें	जिन्नों में से	और इन्सानों में से	हम कर दें उन दोनों को	नीचे	अपने क़दमों के

لِيَكُوْنَا	مِنَ الْاَسْفَلِيْنَ ﴿29﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	قَالُوْا	رَبُّنَا	اللّٰهُ
ताकि वो दोनों हो जाऐं	सबसे निचलों में से	बेशक	वो जिन्होंने	कहा	रब हमारा	अल्लाह है

ثُمَّ	اسْتَقَامُوْا	تَتَنَزَّلُ	عَلَيْهِمُ	الْمَلٰٓئِكَةُ	اَلَّا	تَخَافُوْا
फिर	उन्होंने इस्तिक़ामत इख़्तियार की	उतरते हैं	उन पर	फ़रिश्ते	कि ना	तुम डरो

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَا	تَحْزَنُوْا	وَ اَبْشِرُوْا	بِالْجَنَّةِ	الَّتِيْ	كُنْتُمْ	تُوْعَدُوْنَ ﴿30﴾
और ना	तुम ग़म करो	और ख़ुश हो जाओ	साथ जन्नत के	वो जो	थे तुम	तुम वादा दिए जाते

نَحْنُ	اَوْلِيٰٓؤُكُمْ	فِي الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا	وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ	وَلَكُمْ	فِيْهَا
हम	दोस्त हैं तुम्हारे	ज़िंदगी में	दुनिया की	और आख़िरत में	और तुम्हारे लिए	उसमें

مَا	تَشْتَهِيْٓ	اَنْفُسُكُمْ	وَلَكُمْ	فِيْهَا	مَا	تَدَّعُوْنَ ﴿31﴾ ؕ	نُزُلًا
वो है जो	चाहेंगे	नफ़्स तुम्हारे	और तुम्हारे लिए	उसमें	वो है जो	तुम तलब करोगे	मेहमानी है

ع 4 7 18

مِّنْ غَفُوْرٍ	رَّحِيْمٍ ﴿32﴾ ع	وَمَنْ	اَحْسَنُ	قَوْلًا	مِّمَّنْ	دَعَآ
बहुत बख़्शने वाले की तरफ़ से	निहायत रहम करने वाले की	और कौन	ज़्यादा अच्छा है	बात में	उससे जो	बुलाए

اِلَى اللّٰهِ	وَعَمِلَ	صَالِحًا	وَّقَالَ	اِنَّنِيْ	مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿33﴾	وَلَا
तरफ़ अल्लाह के	और वो अमल करे	नेक	और वो कहे	बेशक मैं	मुसलमानों में से हूं	और नहीं

تَسْتَوِي	الْحَسَنَةُ	وَلَا	السَّيِّئَةُ ؕ	اِدْفَعْ	بِالَّتِيْ	هِيَ	اَحْسَنُ
बराबर हो सकती	नेकी	और ना	बुराई	दूर कीजिए	साथ उस (तरीक़े) के जो	वो	सब से अच्छा है

فَاِذَا	الَّذِيْ	بَيْنَكَ	وَبَيْنَهٗ	عَدَاوَةٌ	كَاَنَّهٗ	وَلِيٌّ	حَمِيْمٌ ﴿34﴾
तो यकायक	वो जो	दर्मियान आपके	और दर्मियान उसके	अदावत है	गोया कि वो	दोस्त है	निहायत गहरा

وَمَا	يُلَقّٰىهَآ	اِلَّا	الَّذِيْنَ	صَبَرُوْا ۚ	وَمَا	يُلَقّٰىهَآ	اِلَّا
और नहीं	डाला जाता उसे	मगर	उन पर जिन्होंने	सब्र किया	और नहीं	डाला जाता उसे	मगर

ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿35﴾	وَاِمَّا	يَنْزَغَنَّكَ	مِنَ الشَّيْطٰنِ	نَزْغٌ
बड़े नसीब वाले पर	और अगर	वसवसा आए आपको	शैतान की तरफ़ से	कोई वसवसा

فَاسْتَعِذْ	بِاللّٰهِ ؕ	اِنَّهٗ	هُوَ	السَّمِيْعُ	الْعَلِيْمُ ﴿36﴾	وَمِنْ اٰيٰتِهِ
पस पनाह मांग लीजिए	अल्लाह की	बेशक वो	वो ही है	ख़ूब सुनने वाला	ख़ूब जानने वाला	और उसकी निशानियों में से है

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الَّيْلُ	وَالنَّهَارُ	وَالشَّمْسُ	وَالْقَمَرُ ؕ	لَا تَسْجُدُوْا	لِلشَّمْسِ	وَلَا
रात	और दिन	और सूरज	और चांद	ना तुम सज्दा करो	सूरज को	और ना

لِلْقَمَرِ	وَاسْجُدُوْا	لِلّٰهِ	الَّذِیْ	خَلَقَهُنَّ	اِنْ	كُنْتُمْ	اِيَّاهُ
चांद को	बल्कि सज्दा करो	अल्लाह ही को	वो जिसने	पैदा किया उन्हें	अगर	हो तुम	सिर्फ़ उसी की

تَعْبُدُوْنَ ﴿37﴾	فَاِنِ	اسْتَكْبَرُوْا	فَالَّذِيْنَ	عِنْدَ	رَبِّكَ	يُسَبِّحُوْنَ
तुम इबादत करते	फिर अगर	वो तकब्बुर करें	तो वो जो	पास हैं	आपके रब के	वो तस्बीह करते हैं

لَهٗ	بِالَّيْلِ	وَالنَّهَارِ	وَهُمْ	لَا يَسْـَٔمُوْنَ ﴿38﴾ السجدة	وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ	اَنَّكَ
उसकी	रात	और दिन	और वो	नहीं वो उकताते	और उसकी निशानियों में से है	बेशक आप

تَرَى	الْاَرْضَ	خَاشِعَةً	فَاِذَاۤ	اَنْزَلْنَا	عَلَيْهَا	الْمَآءَ	اهْتَزَّتْ
आप देखते हैं	ज़मीन को	दबी हुई	फिर जब	उतारते हैं हम	उस पर	पानी	वो तरो ताज़ा हो जाती है

وَرَبَتْ ؕ	اِنَّ	الَّذِیْۤ	اَحْيَاهَا	لَمُحْیِ	الْمَوْتٰى ؕ	اِنَّهٗ	عَلٰى
और वो उभर आती है	बेशक	वो जिसने	ज़िंदा किया उसे	अलबत्ता ज़िंदा करने वाला है	मुर्दों को	बेशक वो	ऊपर

كُلِّ	شَیْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿39﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	يُلْحِدُوْنَ	فِیْۤ اٰيٰتِنَا
हर	चीज़ के	ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है	बेशक	वो जो	इल्हाद करते हैं	हमारी आयात में

لَا يَخْفَوْنَ	عَلَيْنَا ؕ	اَفَمَنْ	يُّلْقٰى	فِی النَّارِ	خَيْرٌ	اَمْ	مَّنْ
नहीं वो छुप सकते	हम पर	क्या फिर वो जो	डाला जाएगा	आग में	बेहतर है	या	वो जो

يَّاْتِیْۤ	اٰمِنًا	يَّوْمَ	الْقِيٰمَةِ ؕ	اِعْمَلُوْا	مَا	شِئْتُمْ ۙ	اِنَّهٗ
आएगा	अमन में	दिन	क़यामत के	अमल करो	जो	चाहो तुम	बेशक वो

بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ ﴿40﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِالذِّكْرِ
उसे जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब देखने वाला है	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	ज़िक्र (क़ुरआन) का

السجدة 11

AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَمَّا	جَآءَهُمْ ۚ	وَاِنَّهٗ	لَكِتٰبٌ	عَزِيْزٌ ﴿41﴾ لَّا	يَاْتِيْهِ	الْبَاطِلُ
जब	वो आया उनके पास	और बेशक वो	अलबत्ता एक किताब है	बहुत ज़बरदस्त	नहीं आ सकता उस पर	बातिल

مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ	وَلَا	مِنْ خَلْفِهٖ ؕ	تَنْزِيْلٌ	مِّنْ حَكِيْمٍ
उसके सामने से	और ना	उसके पीछे	नाज़िल करदा है	हिकमत वाले की तरफ़ से

حَمِيْدٍ ﴿42﴾	مَا	يُقَالُ	لَكَ	اِلَّا	مَا	قَدْ	قِيْلَ	لِلرُّسُلِ
बहुत तारीफ़ वाले	नहीं	कहा जाता	आप से	मगर	वो जो	तहक़ीक़	कहा गया	रसूलों से

مِنْ قَبْلِكَ ؕ	اِنَّ	رَبَّكَ	لَذُوْ مَغْفِرَةٍ	وَّذُوْ عِقَابٍ	اَلِيْمٍ ﴿43﴾
आपसे पहले	बेशक	रब आपका	अलबत्ता बख़्शिश वाला है	और सज़ा देने वाला है	दर्दनाक

وَلَوْ	جَعَلْنٰهُ	قُرْاٰنًا	اَعْجَمِيًّا	لَّقَالُوْا	لَوْلَا	فُصِّلَتْ
और अगर	बनाते हम उसे	क़ुरआने	अजमी	अलबत्ता वो कहते	क्यों ना	खोल कर बयान की गईं

اٰيٰتُهٗ ؕ	ءَاَعْجَمِيٌّ	وَّعَرَبِيٌّ ؕ	قُلْ	هُوَ	لِلَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا
आयात उसकी	क्या अजमी (किताब)	और अरबी (रसूल)	कह दीजिए	वो	उनके लिए जो	ईमान लाए

هُدًى	وَّشِفَآءٌ ؕ	وَالَّذِيْنَ	لَا يُؤْمِنُوْنَ	فِيْٓ اٰذَانِهِمْ	وَقْرٌ	وَّهُوَ
हिदायत	और शिफ़ा है	और वो जो	नहीं वो ईमान लाते	उनके कानों में	बोझ है	और वो

عَلَيْهِمْ	عَمًى ؕ	اُولٰٓئِكَ	يُنَادَوْنَ	مِنْ مَّكَانٍۢ	بَعِيْدٍ ﴿44﴾ ع	وَلَقَدْ
उन पर	अंधापन है	यही लोग हैं	जो पुकारे जाते हैं	जगह से	दूर की	और अलबत्ता तहक़ीक़

اٰتَيْنَا	مُوْسَى	الْكِتٰبَ	فَاخْتُلِفَ	فِيْهِ ؕ	وَلَوْلَا	كَلِمَةٌ
दी हमने	मूसा को	किताब	पस इख़्तिलाफ़ किया गया	उसमें	और अगर ना होती	एक बात

سَبَقَتْ	مِنْ رَّبِّكَ	لَقُضِيَ	بَيْنَهُمْ ؕ	وَاِنَّهُمْ	لَفِيْ شَكٍّ
जो पहले हो चुकी	आपके रब की तरफ़ से	अलबत्ता फ़ैसला कर दिया जाता	दर्मियान उनके	और बेशक वो	अलबत्ता शक में हैं

قرء حفص بتسهيل الهمزة الثانية 12

ع 5 12 19

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّنْهُ	مُرِيْبٍ ﴿45﴾	مَنْ	عَمِلَ	صَالِحًا	فَلِنَفْسِهٖ	وَمَنْ
उसकी तरफ़ से	बेचैन करने वाले	जिसने	अमल किया	नेक	तो अपने ही लिए है	और जिसने

اَسَآءَ	فَعَلَيْهَا ؕ	وَمَا	رَبُّكَ	بِظَلَّامٍ	لِّلْعَبِيْدِ ﴿46﴾
बुरा किया	तो उसी पर है	और नहीं	रब आपका	कुछ भी ज़ुल्म करने वाला	बंदों पर

© AL HUDA INTERNATIONL WELFARE FOUNDATION